अध्याय तृतीय

जैनेन्द्र कुमार के सामाजिक उपन्यासों के विभिन्न आयाम -

(१) पारिवारिक

(२) सामाजिक

(३) आर्थिक

(४) राजनैतिक

(५) धार्मिक

[१] पारिवारिक समस्या :-

[अ] मुक्ति बोध :-

परिवार समाज की आधार शिला है । यही आज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है । बेमेल परिवार की समस्या अनैतिक संबन्धों का निर्माण करती है । पति-पत्नि के विचारों की दूरी पारिवारिक जीवन को असफल बनाती है । भारतीय समाज में शताब्दियों से प्रचलित कुछ परंपराएँ विकृत होकर समाज के वातावरण को विकृत बना रही है । और इसका कारण अनमेल विवाह यही है, अनमेल विवाह पारिवारिक जीवन को नरक तुल्य बना देता है, जिसका प्रतिफल अलगाव होता है । इन तमाम समस्याओं का चित्रण जैनेन्द्रजी ने अपने उपन्यास में बताने का प्रयास किया है ।

" मुक्ति बोध " में जो समस्याएँ हैं उसमें पारिवारिक समस्या के दर्शन होते है, और इसके कारण कभी का कभी परिवार बिखराव के पथ पर आ पहुँचता है । " मुक्ति बोध " का प्रधान पात्र " मि. सहाय " दुविधाग्रस्त व्यक्तित्व है । वह पौवृन वर्ष की आयु का प्रौढ पात्र है । वह राज्य के मन्त्री-पदपर आरूढ लोकप्रिय नेता है । पहले बिताया हुआ उसका जीवन दुविधा रहित था । और सुनिश्चित दिशा में अग्रेसर था । लेकिन यकायक किसी मानसिक-ग्रन्थि के उभार आने से उसका चित्त अशान्त हो जाता है । इसके कारण वह पद का

इस्तीफा देने के लिए तैयार होता है । इसी स्थितिमें वह किसी व्यक्ति में अपनत्व नहीं देख पाता है ।

उसके पुत्र वीरेश्वर का जीवन लक्ष्यहीन दिशा में बह रहा है । विवाहित पुत्री अपने पति के हाथ की कठपुतली बनी, पैसे से बढ़कर किसी वस्तु को नहीं मानती है । सगे-सम्बन्धी उसके मन्त्री पद से लाभ उठाने के लिए चारों ओर मंडराते हैं । उसका बिता हुआ जीवन सगे-सम्बन्धीयों की इच्छानुसार चलता रहा है । उन्होंने जो कुछ उसे बनाया है, वह बना है । इस तरह मि. सहाय तमाम घटनाओं के कारण ही चिन्ता में बैठा है ।

सहाय के हृदय में नीलिमा नामक पैन्तीस वर्षीया युवती के प्रति आकर्षण भाव है । नीलिमा सम्भ्रान्त महिला है । वे दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं, परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण यह प्रणय-सम्बन्ध विवाह में परिणत नहीं हो सका । सहाय का विवाह अन्यत्र होने पर भी, वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं । और सहाय की दुविधा का प्रमुख कारण उसका असफल गृहस्थ जीवन है । वह पत्नी से मुख मोड कर सामाजिक बन्धनों की अवहेलना नहीं करना चाहता है । और नीलिमा के प्रति अपने प्रेमपूर्ण हृदय का गला घोंटना भी उसकी शक्ति से बाहर है । इस प्रकार इच्छाओं और सामाजिक मर्यादाओं को लेकर उसके अन्तर्मन में संघर्ष छिड जाता है ।

सहाय अपनी पत्नी और ठाकूर महादेव सिंह के प्रेम में बाधक नहीं बनता, फिर भी इस घटना से उसके मन-मन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है । वह कहता है - " मैं ठाकूर को देखता रह गया । राजश्री

को लेकर उनमें कितनी दृढता हो जाती है । मैं प्रशंसा कर सकता हूँ, उस भाव की । प्रशंसा कर सकता हूँ, राजश्री को भी कि जिसने वह बल ठाकुर को दिया है । लेकिन उन दोनों के बीच क्या मैं तीसरा ही होने लायक था ? " १

सहाय विवाहित होते हुए भी नीलिमा से प्रेम करता है । इसी कारण उसकी पत्नी राजश्री को स्वतन्त्रता प्रदान करता है ।

सहाय के मन में हीन-भावना के लक्षण स्पष्ट है वह अपने आपको अपनी पत्नी और प्रेयसी के सामने गौण और तुच्छ समझता है । वह पति के रूप में राजश्री के प्रति पूर्ण न्याय नहीं कर पाया है, और नीलिमा को भी प्राप्त न कर सकने में वह अपनी कमजोरी मानता है । इस बात से उसका मन ग्लानि से भर जाता है । राजश्री इस बात को भली भाँति समझती है, और वह नीलिमा से कहती है - " इधर छोटा बनने का इन्हें मोह होता जा रहा है । प्रतिक्रिया होगी अपने अभिमान की । लेकिन तुम फिक्र न करो । छोटे यह नहीं हो सकते, मर्द भी कहीं छोटे होते हैं ? " १

संक्षेप में जैनेन्द्र ने हमेशा की तरह घर और बाहर की विषमताओं को त्याग कर व्यक्ति के अन्तर-बाह्य का चित्रण किया है । सहाय की आत्मपीडा का चित्रण उपन्यास की उपलब्धि है । पूरे उपन्यास का कथानक सिर्फ चार दिनों के अवकाश में घटित होता है ।

इस उपन्यास में लेखक ने पारिवारिक समस्या का अच्छा चित्र दिखाकर उसका नतीजा दिखाने में सफलता पा सके हैं ।

---

१. " मुक्ति बोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ. ४५ ।

१. " मुक्ति बोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ. ४७ ।

[ब] " अनन्तर " :-

" अनन्तर " को " जयवर्धन " उपन्यास में प्रकट विचारधारा की विकसित अथवा प्रौढ कृति कहा जा सकता है । यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास का नायक " प्रसाद " अपने पुत्र और पुत्रवधू को जो मधु पर्व मनाने के लिए जा रहे हैं, उनको स्टेशन पर विदा करने जाते हैं, और वहाँ से लौटते समय अपने जीवन की व्यर्थता को अनुभव करते हैं ।

व्यर्थता बोध की स्थिति में वह पलायन का मार्ग अपनाना चाहता है, और अपने गुरु " आनन्दमाधव " और " अपरा " का प्रस्ताव सुनकर माउँट अबू पर उनको ले चलता है । प्रसाद अन्तरमुखी चेतना से ग्रस्त है ।

प्रसाद का बीता हुआ जीवन हँसी-खुशी का था । वे बगल-लेटी पत्नी की ओर कम, चाँद की ओर अधिक देखते थे, आसमान ताकते-ताकते मानव-जीवन-चक्र की सार्थकता पर विचार करते थे; लेकिन अभी उनमें परिवर्तन हो गया है, वे बिरागी बनते हैं, व्यवहार में दुर्बल बन गये हैं, नैतिक और बौधिक दृष्टियों से दूसरों की सहायता की अपेक्षा रखते हैं । इन्हीं की सहायता गुरु आनन्द-माधव तथा अपरा करते हैं । " मुक्ति बोध " में मि. सहाय की पत्नी और प्रेयसी के कारण जो स्थिति हो गयी है उसी प्रकार प्रसाद की स्थिति दिखाई देती है ।

" अनन्तर " में प्रसाद की सेविका श्रीमती अपरा, उसकी विवाह विलायत में मिस्टर चार्ली से हुआ था । लेकिन पति अपने

को व्यवसाय में और पत्नी को कर्तव्यों में रखना चाहता था । तब अपरा अन्य पुरुषों की ओर उन्मुख हुई । आठ वर्ष का समय विलायत में बिताकर, चार्ली से तलाक जीत कर भारत आई । अपरा आरम्भ में भारत से अनमनी हो चली थी, क्यों, कि भारत नैतिकता में पडा है और व्यवसाय नहीं जानता है । लेकिन बाद में अपरा में परिवर्तन आ गया है, उसने खुद के स्वास्थ्य और स्वभाव में सुधार कर दिया । अपरा ने जीवन देखा ही नहीं, भोगा भी है । भोग की मिठास भी वह जानती है, और कटु आहट भी । इसलिए वह समरस और मुक्त है । वह कहती है कि - " आदमी-आदमी के बीच जिसने शंका पैदा कर दी है, उसे नैतिकता कहते हैं । अपने को गिनती में न/" १ उसके चर्चा वार्ता कारण प्रसाद जैसे प्रौढ विचारक को भी जीवन में नये रस और आयाम का परिचय मिलता है । इतना ही नहीं अपरा " वनानि " के नीति दर्प को तोडती है, साथ ही साथ आदित्य के ध्यान दर्प को भी । आदित्य उसके सामने प्रार्थी हो जाता है, किन्तु अपरा हर कष्ट सहकर भी अपने को उससे अलग और ऊपर रखने में समर्थ रहती है । इस तरह इन तमाम कारणों के वजह से अपरा में नये-पुराने मेल का द्वन्द चलता है । और वह पुरुष के अहम को तोडती है ।

---

१. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. ८१.

फिर आदित्य अपरा को बम्बई ले जाता है । अपरा जाती है, किन्तु उसमें कुछ फर्क नहीं होता । वह अपने को किसी गिनती में नहीं मानती है इसलिए वह सबके लिए अपने को खर्च कर सकती है । उसका अपना कोई घर नहीं है, इसलिए वह सबका घर बना सकती है । इस प्रकार वह आदित्य के साथ बम्बई गयी है, अपने को खर्च करने और प्रसाद की बेटी चारु का घर बनाने अर्थात पर-नारी की ओर उत्सुक एवं उन्मुख आदित्य को धक्का देकर चारु की ओर अधिक उन्मुख करने के लिए । इस प्रकार के कार्य को वह सहज और धर्म-कार्य मानती है । इसलिए वह अपने को एक पुरुष की पत्नी न मानकर धर्म की पत्नी मानती है । अपरा एक समर्थ स्त्री है, अपने मन की है और किसी का प्रभाव स्वीकार करती है ।

इतना ही नहीं चारु के मन में विश्वास करने के लिए " अपरा ने अपना तन-वक्ष दिखाया था । जगह जगह निशान पड़े हुए थे । " १ और इससे यह बात पक्की हो सकती है, कि वह अपरा यौन सम्बन्ध कायम करने के लिए अयोग्य हो चुकी है ।

संक्षेप में जैनेन्द्रजी ने प्रस्तुत उपन्यासों में अपरा के जीवन में "तलाक" यह धर्म की परम्परा आने से कितना आघात हो गया है यह दिखाई देनेका प्रयास किया है, वह पुरुष के विरोधी बन गयी है । यह सब पारिवारिक समस्या का ही नतीजा प्रतीत होता है ।

---

१. " अनन्तर " - जैनेन्द्रकुमार पृ. ८४.

[क] अनामस्वामी :-

" अनामस्वामी " उपन्यास में " त्यागपत्र " के "प्रमोद" के त्यागपत्र देने के बाद के जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । जैनेन्द्रकुमारजी ने प्रथम एक दो परिच्छेदों में चिन्तन पर विश्लेषण किया है, और कथात्मकता उसमें नगण्य है। फिर बारह परिच्छेद लिखकर कथात्मकता का आशय प्रकट किया है ।

प्रमोद के बाद जीवन का एक साथी प्रबोध अब "अनामस्वामी" है । उसका एक आश्रम है, जिसमें अहंकार और अहंता के ज्वार से मुक्त जीवन जीने की कल्पना साकार करने का प्रयत्न किया गया है । शंकर उपाध्याय और अनामस्वामी में बहुत ईर्ष्या है, जिसका कारण रानी वसुन्धरा है, जो शंकर उपाध्याय की भक्त है, और इन्हीं के दूसरे भक्त कुमार की विवाहिता है । इसी कारण ही उपन्यास में अनामस्वामी-शंकर उपाध्याय , - वसुन्धरा-शंकर उपाध्याय, कुमार-शंकर उपाध्याय इन्हीं में द्वन्द्व दिखाने का प्रयास किया गया है ।

शंकर उपाध्याय विद्यार्थी जीवन में वसुन्धरा का पाणि-प्रार्थी रहा है । वसुन्धरा के मन में भी उसके प्रति अनुराग है । किन्हीं कारणोंसे उसका विवाह कुमार से होता है । संयोग से वसुन्धरा का पति कुमार पढाई में शंकर उपाध्याय की अद्भुत प्रतिमा से प्रभावित है, और उसे अपने संरक्षक के रूप में मानता है । सामाजिक मर्यादा के भय से शंकर उपाध्याय इस विषय में शान्त रहता है । उसका मन वसुन्धरा को छोड नहीं पाता है, वह प्रेम कुण्ठा से पीडित रहता है । प्रेम-कुंठित शंकर अपनी पीडा से छुटकारा पाने के लिए अन्यत्र विवाह कर लेता है । यह विवाह उसने भावविश में वसुन्धरा से बदला लेने के

लिए किया था, लेकिन उसका मन विवाह के उपरान्त और अधिक अशान्ति का अनुभव करता है । उसके मन में रह-रहकर वसुन्धरा की स्मृति कौंध जाती है और वह विचलित हो उठता है । प्रेम-कुण्ठा की प्रतिक्रिया स्वरूप वह विवाह संस्था के विरुद्ध सोचने लगता है । उसकी मान्यता है, कि वसुन्धरा और उसके प्रेम में विवाह संस्था ने ही बाधा उपस्थित की है । परिणामस्वरूप वह अपनी पत्नी की हत्या कर देता है । और प्रेम-कुण्ठा से उत्पन्न अपनी हीन-भावना की तुष्टि करना चाहता है । उसके मन में सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं के प्रति आक्रोश है । वसुन्धरा ने इन मान्यताओं का पालन यंत्रवत किया, इसीलिए उसके मन में वसुन्धरा के प्रति भी आक्रोश का भाव है । वह वसुन्धरा के प्रति प्रेम से कुण्ठित होकर घुलता रहता है । वह अचेतन मन से वसुन्धरा को भी घुल-घुलकर तड़पाना चाहता है ।

शंकर उपाध्याय के षड्यन्त्र के फल स्वरूप वसुन्धरा का पति " कुमार " लम्बी बीमारी से पीडित है । वास्तव में वह वसुन्धरा को पीडित देखना चाहता है । वसुन्धरा आत्म-शान्ति के लिए अनामस्वामी के आश्रम में आश्रय खोजती है । शंकर उपाध्याय वहाँ भी जा पहुँचता है, और अध्यात्मवाद की जड़ें उखाड़ने के लिए उतारु हो जाता है । वह खुलकर मठों और आश्रमों की आलोचना करता है । इतना ही नहीं वह वसुन्धरा को आश्रय देने वाले अनामस्वामी को भी नहीं छोडता । वसुन्धरा के प्रति अनामस्वामी के आत्मीयतापूर्ण व्यवहार से खीज उठता है ।

प्रेम-कुंठित शंकर उपाध्याय की स्थिति काम-कुंठा तक पहुँच जाती है । वह समर्पित प्रेमिका को भोगना नहीं चाहता है । अपने प्रताडित

अहं की सन्तुष्टि के लिए उसे तिल-तिल करके जलता हुआ देखना चाहता है । वह स्वयं भी जल रहा है, और तडपना जब उसके लिए असह्य हो जाता है, तो वसुन्धरा को जहर की सुई देकर मार देता है । वह स्वयं के लिए फाँसी की कामना करता है, लेकिन बच जाता है । दसवें वर्ष में आकर अकस्मात जहर की सुई लगाने और परिणाम स्वरूप उसकी मृत्यू हो जाती है ।

संक्षेप में जैनेन्द्रकुमार ने " अनामस्वामी " इस उपन्यास के माध्यम से प्रेम-कुंठा बढाने से आदमी के जीवन मे जब असफलता आ जाती है तब यह सवाल सिर्फ परिवार तक ही सीमित न रहकर समाज के अन्तर्गत कितने परिवार को कैसे नष्ट करता है ? और आत्मपिडन के कारण उसका अन्जाम क्या होता है ? यह बताने का बहुत उचित प्रयत्न किया है ।

(ड) <u>दशार्क :-</u>

समाज में परिवार का अनन्य साधारण महत्त्व है । समाज का निर्माण ही परिवारों से होता हैं । इसलिए दूसरे किसीसमूह की अपेक्षा परिवार का प्रभाव सामाजिक जीवन पर किसी न किसी तरह पडता ही रहता है और वह दूरगामी होता है । परिवार यह समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग होता है । इसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व के पहलू स्पष्टत: दिखाई देते हैं । परिवार में तनाव निर्माण होने के मुख्य कुछ कारण बताए जाते हैं, उनमें आर्थिक अभाव, यौन सम्बन्ध, असंतुष्टता आदि हैं । जैनेन्द्रकुमार के " दशार्क " में इन्हीं कारणों की

वजह से पारिवारिक विघटन हुआ है । उपन्यास की नायिका रंजना और उसके पति शेखर दोनों सुशिक्षित हैं । समझदार हैं, मगर एक दूसरे को समझाने में कामयाब नहीं होते, और उनके बीच संघर्ष होकर परिवार टूटता है । शेखर जो विश्वविद्यालय में प्रथम आने के कारण लेक्चरर बनता है, उसके ससुर बहुत बडे अमीर है, उनके जैसे हम भी अमीर बन जाये, इसलिए वह कुछ मार्ग अपनाने का प्रयास जारी रखता है, बाद में एक निर्णय पर आता है, कि जल्दी से पैसा प्राप्त होने के लिए वह जुआरी बन जाता है, इसमें हारने के कारण सब बिका जाता है, जमीन जायदाद सब बिकने पडते हैं और शेखर शराबी बन जाता है । पत्नी अपने मायके चली जाती है। शेखर वहाँ जाता है पत्नी को लाने के लिए, किन्तु पत्नी को यह बात पसन्द नहीं और अन्तमें आलोक उनका बेटा, पति, पत्नी इन्हीं में बिखराव आ जाता है, तीनों के रास्ते अलग अलग रहते हैं। शेखर इधर-उधर भटकने के अलावा कुछ नहीं करता। रंजना पैसे के प्राप्ति के लिए वेश्या बन जाती है । बेटा आलोक इन दोनों से बिछडकर कहीं ओर ही जाता है । यानी पैसे की कमी और असन्तुष्टता इन्हीं के कारण परिवार में संघर्ष पैदा होता है । यही चित्र जैनेन्द्रजी ने बताने का प्रयास किया है ।

उपन्यास में दूसरे एक पात्र सेठ मानिकलाल है उसकी पत्नी मधुरिमा इन दोनों में कई बार संघर्ष होता है, सेठ तीन चार मिल का मालिक है, पैसे की उसके पास कमी नहीं है, इसलिए ही परिवार में तनाव बढने का कारण बन जाता है । वह मद्यपान करता है और बाहर स्त्रियों से सम्बन्ध रखता है, इसलिए मधुरिमा दुःखी होती है । कई बार पत्नी की भी गलती होती है, और हमेशा संघर्ष रहता है।

मगर परिवार टूटता नहीं, टूटने के रास्ते पर है । जैनेन्द्रजी ने " दशार्क " मे गृहमन्त्री के परिवार के बारे में भी बताया है, रंजना अपने पति को अपना ले यह बताने के लिए रंजना के पास आकर मन्त्री कहते हैं, " हाँ गृहमन्त्री दफ्तर में छूट गया है, मेरी पत्नी नहीं है । गयें उसे कई बरस हो गैय है । वह विक्षिप्त हो गयी । इसलिए कि वह बडे घार की थी, और मैं राजनीति के पीछे आवारा बना हुआ था । सच में तो मैं विक्षिप्त था, होना उसे पडा । मैं तुम्हें यही कहने के लिए मिलना चाहता था, कि ऐसे पति के दुःख को समझो । मैं भुक्त भोगी तुम्हारे सामने हूँ । गृहमन्त्री हूँ और सब हूँ पर अन्दर से टूटा हूँ । इस तरह परिवार बिखराव का कारण अलग रहता है, मगर उसका नतीजा एक ही है ।

इस उपन्यास में आये हुए और जो पात्र हैं, मेहन्दी, सकीना, मालती भी परिवार बिखराव से ही वेश्या बने हैं । हर एक का कारण अलग है मगर परिवार बिखरना और गलत रास्ते पर जाना यही महत्वपूर्ण बात रही है ।

इसतरह जैनेन्द्रजी ने परिवार में संघर्ष किस तरह होता है ? क्यों होता है ? कैसे होता है ? और उसका नतीजा क्या मिलता है ? यह आम आदमी से लेकर बडे लोगों के परिवार तक के प्रसंग बहुत सही ढंगसे बताने में कामयाब हो गये हैं ।

---

१. जैनेन्द्रकुमार " दशार्क " पृ. ३९ ।

3] सामाजिक समस्या —

साहित्यकार के चिन्तन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष समाज से सम्बधित होता है। "साहित्य समाज का दर्पण है" ऐसा कहा जाता है और इसी कारण समाजसे सम्बन्धित सभी समास्याओं का अंकन साहित्यकार साहित्य में करते हैं और समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं।

जैनेन्द्रकुमार जीने "मुक्तिबोध" में विभिन्न सामाजिक समस्यायें बताने का उचित प्रयास किया गया है। वैसे जैनेंद्रकुमार को सामाजिक उपन्यासकार तो नहीं कहा जा सकता। समकालीन समाज की परम्पराओं अथवा जन-जीवन को चित्रण उनके साहित्य में अपेक्षाकृत नगण्य है। फिर भी उनके कथा-साहित्य के आधार-पर सामाजिक चिन्तक का रूप ही सर्वाधिक उभरकर सामने आता है। जैनेन्द्रकुमार सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन की आवश्यकता अत्यन्त तीव्रता से अनुभव करते हैं। कुछ नये सामाजिक मूल्य उनकी दृष्टि में दिखाई देते है और वे उन सामाजिक समस्याओं का समाधान इन मूल्यों की स्वीकृति में मौजूद है।

उनका सामाजिक चिन्तन तत्कालीन भारत की समस्याओं से सम्बन्धित नहीं है, वरन् स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के कारण उत्पन्न देश-काल निरपेक्ष समस्याओं का स्थायी समाधान प्रस्तुत करने के लिए प्रयत्नशील है। उनके सृजन की मूल प्रेरणा, कोई न कोई विचार होता है। उस " विचार " की अभिव्यक्ति के लिए जैनेन्द्र घटना अथवा पात्र समाज से न लेकर, अपनी कल्पना से बुनते है। परिणामतः उनके साहित्य में चित्रित समाज के आधार पर तत्कालीन

समाज का यथार्थ परिचय पाना असंभव हो जाता है ।

जैनेन्द्र के अधिकांश उपन्यासों का प्रतिपाद्य समाज में प्रेम तथा विवाह से सम्बन्धित जटिलताओं का निरूपण करना है । जैनेन्द्र का सामाजिक चिन्तन व्यक्ति के जीवन में परिवार, विवाह और प्रेम की समस्याओं से आक्रान्त है । इन विषयों में से सम्बन्ध तत्कालीन समाज की अनेक समस्याओं, यथा बाल-विवाह, विधवा-विवाह, जाँति-पाँति के बन्धनों के कारण प्रेम-विवाह का विरोध, स्त्री के समक्ष घर-बाहर की समस्या, अनमेल विवाह, सामाजिक-आर्थिक असमानता, आदि का उल्लेख मिलता है ।

[अ] " मुक्ति बोध " :-

प्रतिपाद्य के धरातल पर " मुक्ति बोध " प्रेम और विवाह से अनुलग्न प्रश्नों से सम्बन्धित नहीं है । एक राजनीतिज्ञ के जीवन से उठी दुविधा के माध्यम से मुक्ति के बोध का विश्लेषण " मुक्ति बोध " का कथ्य है, किन्तु उपन्यास के वातावरण एवं चरित्र-निर्माण में जैनेन्द्र की प्रेम और विवाह सम्बन्धी धारणाओं का स्पष्ट प्रतिपादन है । " मुक्ति बोध " की रचना आत्मकथात्मक शैली में हुई है । कथा का नायक सहाय चौवन वर्ष की आयु का प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ है । उपन्यास के आरंभ में ही सहाय के अनुभाव के माध्यम से जैनेन्द्र ने विवाह संस्था की सार्थकता से सम्बन्धित उक्ति दी है, " सचमुच इधर पत्नीत्व की संस्था में मुझे अर्थ प्रतीत होने लगा है । पत्नी बच्चों की माता हो सकती है, पर

उमर आने पर उसकी गहरी वत्सलता पति को ही प्राप्त होती है । अर्थात विवाह का सार वय की नवीनता में नहीं मिला, अब अधिकता में मिल रहा है । " १

" मुक्ति बोध " में चौवन वर्ष के वय में भरे पूरे परिवार के होते हुए भी, सहाय के नीला से प्रेम सम्बन्ध बने हुए हैं और इन सम्बन्धों के विरुद्ध सहाय की पत्नी, तीस की अवस्था से ऊपर का समझदार पुत्र बाल-बच्चों वाली पुत्री और जामात ● किसी के मन में कोई आपत्ति नहीं हैं, उतना ही नहीं सब नीला को परिवार की हितैषिणी के रूप में देखते हैं । भारतीय परिवारों में इस प्रकार के सम्बन्ध न केवल पति-पत्नि के सम्बन्ध में अशान्ति एवं कलह उत्पन्न कर देते हैं, वरन् सम्पूर्ण परिवार का ढाँचा ही हिला डालते हैं । सहाय की पत्नी राजश्री ने न केवल पति की प्रेयसी से समझौता किया है, वरन् वह उसे अपने पति की उन्नत्ति के लिए अनिवार्य मानती है । वह कहती है, " हाँ आदमी में देवता होता है । और पत्नी नहीं प्रेयसी उसे जगाती है । तुम अपने देवत्व से लडते क्यों हो ?, तुमको तृप्त और प्रसन्न आते देखूँ, तो क्या इसमें मुझे प्रसन्नता नहीं होगी ? पर आज तुम वैसे नहीं दीखाते हो । मैं नहीं मानती कभी नीलिमा की तरफ रही होगी । बीच में जरुर तुम्ही उखाड पडे होगे । " २

---

१. " मुक्ति बोध " जैनेन्द्र पृ. १० ।

२. " मुक्ति बोध " जैनेन्द्र पृ. ७० ।

सहाय के लिए तो नीला अनिवार्य है ही क्यों, कि अन्य सम्बन्धों में से उसकी ओर से दूसरों को अपेक्षाएँ है, जब कि नीला के प्रेम में स्वीकार ही स्वीकार है । अपेक्षा कुछ भी नहीं, है ।

विवाह के पश्चात पुरुष का पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री से तथा पत्नी का पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष से प्रेम सम्बन्ध बना रह सकें इसलिए दोनों ओर से उदारता की अपेक्षा है । जैनेन्द्रजीने यही बताने का प्रयास यहाँ नीला और सहाय के माध्यम से किया है । नीलिमा और उसके पति सम्बन्धों का विश्लेषण स्वयं नीलिमा के शब्दों में इस प्रकार है. " वह अपने को आजाद रखते है, और मैं इसमें उनकी सहायता करती हूँ । इसी में मेरी आजादी अपने आप बन जाती है । अपने से पूछो मेरी आजादी का श्रेय क्या तुम दर को दोगे, मुझे नहीं दोगे ? " १ इसी प्रकारकी उदारता सहाय की पत्नी राजश्री में भी है । वह नीला के पास अपने पति को भेजकर उसे खो देने के भय से आशंकित नहीं है, " जितना तुमको स्वतंत्र रख सकूँगी, उतने तुम मेरे होंगे । यह मैं अनुभव से जान गयी हूँ । "२ सहाय की ओर से भी राजश्री को पूरी स्वतंत्रता है, किन्तु उसके किसी प्रेम सम्बन्ध की चर्चा नहीं हुई है । हाँ ठाकुर के साथ राजश्री के सम्बन्धों में जिस सामीप्य और खुलेपन का वर्णन हुआ है ।

नीलिमा सहाय के जीवन में प्रेयसी के रूप में आती है, तो सहाय की पत्नी राजश्री और ठाकुर के बीच सम्बन्ध निर्माण होता है,

---

१. " मुक्ति बोध " जैनेन्द्रकुमार पृ. ११९ ।

२. " मुक्ति बोध " जैनेन्द्रकुमार पृ. ८१ ।

यह समस्या क्यों निर्माण हो गई, यह गहराई में सोचनीय सवाल बन जाता है । इतना ही नहीं सहाय यह एक ऐसा पात्र "मुक्तिबोध" में है कि वह पत्नी की अपेक्षा प्रेयसी से ही सब कुछ चाहता है, वह एक जगह कहता है, " पति-पत्नी का सम्बन्ध केन्द्र है । वह ध्रुव है, कि जिस के आधारपर परिवार की एकात्रता और समाज की मर्यादाशीलता खडी है । सही-गलत सब उसके संदर्भ से बनना चाहिए । लेकिन मैं नहीं जानता, कि नीला को लेकर मुझ से क्या होता है, । एक आत्मिक स्फूर्ति-सी- मिलती हैं, राजश्री को लेकर वह नहीं हो पाता । वह विवाहित है, मैं विवाहित हूँ । इसी कारण सुख-सौहार्द क्या निषिद्द बना देना होगा ? " १

सहायके द्वारा इस कथन से यह सिध्द किया जाता है, उसमें कोई शक नहीं लेकिन इसी तर्क आधार पर सहाय नीला के साथ अपने सम्बन्ध की आवश्यकता सिध्द कर लेते हैं, किन्तु सामाजिक मर्यादाओं और सांस्कारिक भाव-बोध के कारण कभी-कभी इस सम्बन्ध के लिए संकुचित भी होते है । " २

इस तरह नारी के लिए समाज में कौन कौनसी आपत्तियों से हटकर मुकाबला करना पडता है, इसकी सम्यक मिसाल जैनेन्द्रजी ने " मुक्ति बोध " इस उपन्यास में बताये है ।

---

१. "मुक्तिबोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १२३.।

२ २. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्रकुमार पृ. ५२ ।

[ब] <u>अनन्तर :-</u>

जैनेन्द्र के अन्य अनेक उपन्यासों के समान " अनन्तर " की रचना भी प्रथम पुरुष में हुई है । इस उपन्यास में विदेशी प्रभाव से प्रेरित ही एक भारतीय नारी भारत में आती है, तो उसको यहाँ की नैतिकता के दृष्टि से कैसा समझौता करना पडता है, साथही साथ समाज में जो ऐसी धर्म-परम्परा है, जिसके कारण उस स्त्री के जीवन में कैसा परिवर्तन किया है, यह भी बताया है ।

केम्ब्रिज से साहित्य में डाक्टरेट प्राप्त अपरा विलायत में दाम्पत्य के आठ वर्ष निभाकर तलाक जीतकर भारत चली आयी है । भारत के नैतिक वातावरण में वह अपने पुनर्विवाह अथवा पत्नीत्व की सम्भावना समाप्त देखती है । यूं ही वह अपने को एक में खो सकें, यह उसे अपने लिए असम्भव दीखता है । अब तक के जीवन में उसने कुछ सीखा और जाना है, उसके आधार पर वह अपने जीवन को एक प्रयोग के परीक्षण में लगा देना चाहती है । वह चारु और आदित्य की सहाय्यता करती है । चारु को देखते ही अपरा जान लेती हैं, कि उसमें डर है, अपना डर, पतिका डर, और अपरा यह भी समझ लेती है कि चारु और आदित्य की गृहस्थी ऊपर से भरी-पूरी दीखती है, परन्तु भीतर से खोखली है । अत: चारु की सहायता के लिए उसका पति उसे पूरी तरह सौंपने का दायित्व अपरा अपने ऊपर लेती है । अपरा के कारण चारु और आदित्य की सुखी गृहस्थी को फिर से हरा-भरा करके स्वयं बीच से हट जाती है ।

पुरूषा जाति के मोह में फँस कर उसने सब दुःख सहने के बाद आठ वर्ष के बाद तलाक से फिर मुक्त होती है, लेकिन बाद में जब अपने जैसी दूसरी स्त्रियों की समस्या का हल करने का जब प्रयास करती है, तभी पुरूषा को आकर्षित करके ही परिवर्तन करना पडता है, यह बडी ताज्जुब की बात है । चारु और आदित्य में समीप आने के लिए वैसीं यही करना पडता है, आदित्य के सामने अपने आपको पहले एक चुनौती के रूप में रखाती है, और फिर उसे अपनी ओर आकर्षित कर लेती है, और फिर पूरी परीक्षण-विधि से गुजरती हुई अपने अपूर्व विलक्षण का त्याग करके आदित्य और चारु को सुखी बनाती है । " पुरूषा " को आकर्षित करने के लिए स्त्री यह काम और वह अपने पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करे यह भी स्त्री को ही करना पडता है । समाज में पुरूषा स्त्री की ओर तुरंत आकर्षित होता है, और तुरन्त ही उस से नफरत करता है, यह समाज को शोभा नहीं देता । इस अशोभनीय कृत्य से ही सामाजिक समस्याएँ निर्माण हो जाती हैं, और स्त्री कई बार वेश्या बन जाती है । यानी ऐसी स्त्रियों को वेश्या बनने में जादा समय नहीं लगेगा ।

इसी उपन्यास में ऐसी घटनाओं के कारण पत्नी बनना पसन्द नहीं करती और अध्यात्म मार्ग पर चलती है । उपन्यास में और भी वे पात्र है, वाग्मी, विदुषी, कन्या । वे उच्च एवं अध्यात्मिक विचार की वाली हैं । उनका विचार है, अविवाहित रहने में स्त्री-जीवन की सार्थकता है । उनकी दृष्टि में सृष्टि चलाने के लिए स्त्री-पुरूषा का विवाह में बन्धा जाना अनिवार्य हो सकता है, लेकिन सम्पूर्ति उसमें नहीं है ।

" दोनों व्यक्ति रूप में एक-दूसरे को पहचाने और सहयात्री होकर स्वेच्छा से उन लोकोत्तर शक्तियों के मात्र वाहक बन जाएं तो ही सच्ची सार्थकता मिल सकती है । " १

इन आध्यात्मिक विचारवालों ने यह सब बताया है, लेकिन इन्हीं से बढ़कर अपरा का स्थान है, क्यों, कि वह भौतिक या आध्यात्मिक में सुख की भी इच्छा नहीं करती । वन्या जैसी आध्यात्मिक नारी अथवा रामेश्वरी और चारु जैसी घरेलू नारीयों की तुलनामें सामान्य रूप से चरित्रहीन अथवा नीतिहीन समझी जानेवाली " अपरा " लेखक और पाठक की दृष्टि में नि:स्वार्थी त्यागमयी नारी हैं ।

प्रेम और विवाह के अतिरिक्त " अनन्तर " में अपरा और प्रसाद के माध्यम से स्त्री-पुरुष सम्बन्ध का एक और पक्ष भी लिया गया है । प्रसाद अबू में आयोजित सम्मेलन में भागलेने के लिए आमंत्रित हैं । उनकी देखभाल के लिए उनकी पत्नी का साथ उन्हें अपेक्षित है, किन्तु पारिवारिक कारणों से पत्नी साथ जा नहीं सकती, अत: उनके साथ अपरा को भेजने की व्यवस्था कर दी जाती है । अपरा रामेश्वरी के स्थान पर भेजी गयी है, अत: पत्नीवत व्यवहार करना अपना धर्म समझती है, अपने स्वार्थ के लिए नहीं, प्रसाद के लिए । दोनों जिस कूपे से यात्रा कर रहे हैं, उसके बाहर अपरा के निर्देशपर "मिस्टर एण्ड मिसिज " लिखा गया है । प्रसाद के आपत्ति करने पर वह स्वीकार करती है, " बट आई डू मीन टू अप्रिसिएट फॉर युवर वाइफ । " २ अपरा के इस ऐसे उत्तर प्रसाद को "बदतमीजी" लगती है ।

---

१. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार - पृ. १५९ ।

२. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार - पृ. २९ ।

अब यहाँ सवाल यह आता है, कि, हमारी समाज व्यवस्था के कारण ये सब सच है, क्यों, कि, समाज की व्यवस्था अच्छी है, या बुरी है, यह कौन बताएगा ? अमरा में गलत क्या है ? अमरा क्यों प्रसाद की " अफ्फिसिएटिंग वाईफ " बन गई है ? क्या यह सम्बन्ध अनैतिक एवं अवैध नहीं है ? लेकिन ऐसी समाज व्यवस्था क्या काम की ?

अमरा की आयु पैंतीस वर्ष और प्रसाद जो बासठ वर्ष के हैं इस में कौनसी प्यार हो सकता है । लेकिन समाज यह नहीं मानता, कि क्या बुरा और क्या अच्छा ?

संक्षेप में " अन्तर " उपन्यास में व्यक्त समस्याएँ समाज से सम्बन्धित हैं । विवाह के बाद स्त्री को स्वतंत्रता चाहिए । उसका प्रतीक अमरा है । तो दूसरी ओर आदित्य- और चारु में आर्थिक कारण पारिवारिक समस्या निर्माण करता है । पुरुष को पत्नी के आलावा और एक प्रेयसी के रूप में स्त्री चाहिए, जिसके बिना उसके हर काम में रूकावट आ जाती है । सहाय, प्रसाद की वही स्थिति है ।

इन्हीं तमाम कारणों के बावजूद परिवार में, समाज में हजारों की संख्या में समस्याएँ हैं । कुछ सामाजिक समस्याएँ उपन्यास के माध्यम से बताने का प्रयास किया है ।

[क] अनामस्वामी :-

जैनेन्द्रकुमार का यह उपन्यास सभी उपन्यासों से अलग है, क्यों, कि, इसमें "ब्रह्मचर्य" पर ही जादा चर्चा हुई है । " वासना को भीतर दबाकर ऊपर हाथ-पैर फेंकने से कुछ नहीं होने वाला है । " १
" अनामस्वामी " का कथ्य प्रेम, काम, विवाह आदि विषयों की व्याख्या विश्लेषण करता हुआ, ब्रह्मचर्य में पूर्ण परिणति प्राप्त करता है ।
" अनामस्वामी " की रचना जैनेन्द्र ने ब्रहमचर्य सम्बन्धी अपने चिन्तन की व्याख्या के लिए की है । जैनेन्द्र के चिन्तन-ग्रन्थों में इस सम्बन्ध में पर्याप्त विस्तृत विवेचन उपलब्ध है, किन्तु सृजनात्मक धरातल पर अब तक के उपन्यासों में वे प्रेम और विवाह से सम्बन्धित उलझनों को सुलझाने में रत रहें ।

ब्रहमचर्य प्रेम और विवाह से स्वतंत्र प्रश्न नहीं है- प्रेम और विवाह से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान ब्रहमचर्य में है- इस तथ्य की उपलब्धि " अनामस्वामी " में ही उपलब्ध होती है । अन्य उपन्यासों में विस्तार से विवेचन प्रेम और विवाह सम्बन्धी अपनी अवधारणाओं को अनामस्वामी में जैनेन्द्रकुमारजी ने उल्लेखित कर दिया है । "अनामस्वामी " में आये प्रेम, काम तथा विवाह सम्बन्धी प्रसंग जैनेन्द्र की पूर्व विवेचित मान्यताओं को ही दोहराते है ।

प्रेम और विवाह की तुलनात्मक व्याख्या उसके सामाजिक पक्षको तथा प्रेम और काम की व्याख्या उनके नैतिक पक्षको स्पष्ट करती है ।

---

१. " अनामस्वामी " - जैनेन्द्रकुमार पृ. ३६.

" अनामस्वामी " में जैनेन्द्रकुमार ने इन दोनों पक्षों के साथ-साथ प्रेम के आर्थिक पक्षको उठाया है । " अनामस्वामी " जैनेन्द्रकुमार की यह कृति ही अलग दिखाई देती है । हमेशा कि तरह उपन्यास में प्रेम-विवाह से सम्बन्धित समस्याएँ बताने का प्रयास जारी था लेकिन, आश्रम, क्लब जैसे कुछ अध्यात्मिक विचार बताकर इन्सान के जीवन में सुधार लाने के लिए " ब्रहमचर्य " को प्रधानता दी है । विवाह का खण्डन पात्रों के माध्यम से किया है, विवाह से इन्सान बन्दी नहीं बनना चाहिए वगैरा कहा है ।

फिर भी उपन्यासकार जैनेन्द्रकुमारजी ने सामाजिक समस्याएँ निर्माण होने वाले बहुत से प्रसंग प्रस्तुत किए है । शंकर उपाध्याय जो पहले से ही वसुन्धरा को चाहते थे, लेकिन वसुन्धरा अनामस्वामी के आश्रम में जाती है, और उसी आश्रम में रहने वाले एक भक्त कुमार से विवाहित होती है । इन तमाम कारणों से शंकर उपाध्याय, वसुन्धरा, अनामस्वामी, कुमार इन तीनों के साथ ईर्षा करता है । उसके मन में " अनामस्वामी " के आश्रम के नियमों के कारण यानी भारतीय विवाह व्यवस्था से ही वसुन्धरा उससे अलग हो जाने से वह दुःखी होता है । साथ ही साथ कुमार से भी नफरत करता है, क्यों, कि, वह वसुन्धरा का पति है । इन तमाम घटनाओं के कारण वह कुछ षडयंत्र बनाता है, जिसके कारण कुमार को लम्बी बिमारी के साथ मुकाबला करना पडता है । इतना ही नहीं बादमें कुमार वसुन्धरा को शंकर उपाध्याय के पास जाने के लिए मजबूर करता है, और उससे पुत्रप्राप्ति की अपेक्षा करता है । वसुन्धरा जाती है, लेकिन वह उसका अस्वीकार करता है ।

लेकिन उसने वसुन्धरा को दुःखी करने के लिए अपना विवाह दूसरे लडकी के साथ किया है, लेकिन उसे उसीं में खुशी नहीं मिलती, बल्कि और दुःखी और अशान्त बन जाता है और अपनी पत्नी की हत्या कर डालता है । फिर बाद में जहर की सुई लगाकर वसुन्धरा की भी हत्या करता है । खुद भी आत्म हत्या करनेका प्रयत्न करता है, लेकिन उस में वह बच जाता है । लेकिन आठ वर्ष के बाद जहर की सुई लगाकर मर जाता है । यहाँ समस्या जो निर्माण हो गई है, वह वसुन्धरा और शंकर का विवाह न होने के कारण क्या क्या हो गया है यह जैनेन्द्र ने बहुत अच्छी तरह बताने का प्रयास किया है ।

संक्षेप में यहाँ शंकर उपाध्याय का मन वसुन्धरा को छोड नहीं पाता है, फलस्वरूप वह प्रेमकुण्ठा से पीडित रहता है । प्रेमकुण्ठा से पीडित से छुटकारा पाने के लिए अन्यत्र विवाह करता है, लेकिन उसमें वह कामयाब नहीं होता । उसके मन में विवाह संस्थाने ही अपना वसुन्धरा के साथ विवाह होनें में बाधा उपस्थित की है इसी कारण दो स्त्रियों की हत्या करता है, और कुमार को षडयन्त्र से जीवन भर का बीमारी बनाता है, बादमें खुद भी आत्म हत्या करता है । इसतरह " विवाह संस्था " के नियम या समाज व्यवस्था की प्रक्रिया इसके कारण यह सब कयामत आ जाती है । सब के सब घर बरबाद हो जाते हैं ।

[ड] दशार्क :-

जैनेन्द्रने अब तक जितने उपन्यासों की कृति की है, उन्हीं में कुछ ना कुछ समस्या रहती है विशेषत: सामाजिक समस्या का प्रभाव जादा दिखाई देता है । सब कृतियों से " दशार्क " में जैनेन्द्रजीने एक ऐसी समस्या खडी की है, कि जिस से साहित्य क्षेत्र में, समाज में हंगामा हो जाय । वह समस्या समाज से ही सम्बन्धित है, समाज ही उसे निर्माण करता है, और समाज ही उसे अपराधी बनाने का प्रयास करता है ।

"दशार्क" में रंजना एक सुशिक्षित स्त्री है, वह एम. ए. एल. एल. बी. है, मगर पति शराबी, जुआरी बनने के कारण वह वेश्या बनना पसन्द करती है । वह कहती है, मेरे पास बिकने के लिए तन के अलावा कुछ नहीं है । इस व्यवसाय में सफलता पाकर कुछ दिन खुशी के बिताती है, इतने में इसी समाज के प्रतिनिधी, सरकार के प्रतिनिधी, पत्रकार [देशी, विदेशी] पुलिस, स्मगलर, मिल मालिक, सब परेशान कर देते हैं, उसपर दोषारोप करते हैं, नगर छोडकर चली जाने को कहते हैं । यह कहाँ तक ठीक है, यह सवाल ज्वलन्त बना हुआ दिखाई देता है । अगर घर को स्वच्छ रखना है, तो " मोरी " चाहिए । अगर मोरी नहीं तो घर अस्वच्छ ही रह जाऐगा । समाज पर उसका बहुत बुरा असर हो सकता है ।

समाज में जब जो भी सवाल खडे होते हैं वे समाज से ही निर्मित है, उसको समाज ही जिम्मेदार है, दुनिया में कौन है, जो बुरा होना चाहता है, और कौन है, जो बुरा नहीं है, अच्छा ही है । रंजना को एक समाज का हिस्सा " शोखर " उसका पति उसने ही उसकी यह हालत बनाई है, जिस से वह वेश्या बन जाती है, समाज के ही लोग उसके पास जाते हैं , और बाद

में उसके खिलाफ आवाज उठाने का काम सेठ मानिकलाल जैसे करते हैं, मकान वापस मिलने के लिए वकील द्वारा नोटिस भेजता है, रंजना को मारता है, कई बार अखबार में उसका चित्र, मकान का चित्र आता है, इस के कारण रंजना का जीना हराम हो जाता है । इतना ही नही रंजना जो भी बनी है, और जो कुछ करती है, उसको समाज ही जिम्मेदार है, साथ ही साथ समाज उसका लाभ भी उठाता है । " भगिनी " समाज की अध्यक्षा " शेफालिका " उससे पाँच हजार रुपये लेकर जाती है, " बेला " नामक एक लड़की की शादी के लिए दहेज के रूप में रंजना तीन हजार रुपये देती है, इतना सब कर के भी समाज उसके खिलाफ कुछ करने के लिए आगे पीछे नहीं देखता, उसे दोषी, अपराधी बनाकर शहर से बाहर निकालने के पीछे सब लोग रहें हैं ।

जब जब ये सब लोग यहाँ आते थे, तब उन लोगों का रंजना पर अन्याय, अत्याचार ही होता था, मन्त्री के सचिव के सहायक तो एक बार बिना पैसे से यानी मुफ्त में ही लाभ उठाना चाहता था, उसे रंजना ने विरोध करने के कारण उसने बूट से इतना मारा कि, रंजना की पसलियों में चोट आ गयी, यह कहाँ का इन्साफ है । पतिने यह हाल बना दिया, सचिव के सहायक, मिल के मालिक सेठ मानिकलाल वगैरे शराब पीकर रंजना को मारते हैं, यही समाज रंजना के साथ किस तरह का बर्ताव करता है । उपन्यास में रंजना के बिरादरी के और भी पात्र हैं, पारमिता, स्मगलर माधव, कालीचरण, मेहन्दी, सकिना, मालती आदि । पारमिता को क्रान्तिकारी, माधव को स्मगलर, कालीचरण को विद्रोही, मेहन्दी, सकिना, मालती को वेश्याएँ बनाने का महान कार्य इस समाज ने ही बहुत परिश्रम के साथ किया है, जिसके कारण ये सभी लोग

गलत रास्ते पर हैं, मगर उन्हें ही अपराधी बनाने का काम कानून, समाज, सरकार करती हैं और उसमें अपनी मान-प्रतिष्ठा समझ लेते हैं ।

रंजना, मेहन्दी, सकीना, मालती ये सभी स्त्रियाँ हैं, आदमी हर एक अपना व्यवसाय करता है, उसी तरह इन्होंने भी यह व्यवसाय जारी रखा है, यानी वेश्या यह व्यवसाय का नाम है, स्त्री का नहीं । स्त्री वह व्यवसाय करती है, और समाज के प्रतिष्ठित, सभ्य लोग जो गिरस्ती में हैं, मगर उन्हें वहाँ सुख नहीं मिलता इसलिए इन लोगों के पास शराब पीकर आते हैं, इन्हें धमकाते हैं, मारते हैं, और अपना स्वार्थ साध्य करके जाकर इन्हीं [illegible] के खिलाफ कुछ करते हैं, यही समाज की रीति, पध्दति है । इन्हीं के व्यवसाय में बहुत कुछ समस्याएँ हैं, दलाल, दादालोग, मकान मालिक पुलिस आदि हैं । इन्हीं की समस्या की तरफ ना समाज का, ना सरकार का ध्यान है, बल्कि उनको कैसे परेशान किया जाय, उन से पैसे कैसे मिलेंगे इसी बारे में ये सब लोग सोचते हैं , यानी समाज कितना एहसान रखनेवाला है, यह दिखाई देता है ।

वेश्याओं की समाज को आवश्यकता है या नहीं ? वेश्या क्यों बनती है, या बनायी जाती है ? अगर वेश्या समाज में रही तो क्या हो जाएगा ? आदि महत्वपूर्ण सवालों पर समाज ने, सरकार ने, विचार किया, तो कुछ उचित उत्तर मिल जायेगा । और समाज में सहयोग, दया, सहानुभूति वगैरा वेश्याओं के बारे में आ सकती है । और इसी महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता के लिए जैनेन्द्रजी ने इस समस्या को लिया है, उनकी भाषा, शैली सब प्रतिकात्मक रही हैं, उन्होंने यह " बम " मखमली कपडों में बाँधकर समाज के सामने रखा है ।

[३] आर्थिक समस्या :-

मनुष्य-जीवन के समस्त क्रियाकलापों एवं चिन्तन में "अर्थव्यवस्था " का योग सम्भवत: आज सर्वाधिक है । साहित्यकार-मानव-जीवन को उसकी समग्रता में चित्रित करता है । अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास में व्यक्ति-जीवन, सामाजिक तथा आर्थिक परिवेश में अधिक पूर्णता से चित्रित होता है, अत: उपन्यासों में " अर्थ-चिन्तन " की उपेक्षा करके जीवन का चित्रण जैनेन्द्र के लिए असंभव था ।

जैनेन्द्रकुमार की दृष्टि मुख्यत: आध्यात्मिक है, इसी से उनमें भौतिकवादियों की अपेक्षा गाँधी से साम्य ही सहज स्वाभाविक है । महात्मागाँधी के चिन्तन में जीवन के आध्यात्मिक पक्ष के साथ, " आर्थिक " पक्ष भी पर्याप्त महत्वपूर्ण था । जैनेन्द्रकुमारजी ने देश-काल-मुक्त पात्रों के व्यक्तित्व के विश्लेषण में अर्थ का महत्व नगण्य है । इसी से उपन्यासों में आर्थिक चिन्तन अपेक्षित महत्व नहीं पा सका है । प्रथम उपन्यास " परख " में ही सिर्फ जैनेन्द्रजी ने अर्थशास्त्र के महत्वपूर्ण विषयों, श्रम, उत्पादन, आर्थिक असमानता, पूंजी, कृषि, उद्योग आदि पर चिन्तन किया है । शेष समस्त उपन्यासों में भी इन विषयों पर उनके विचार पर्याप्त विस्तार से उपलब्ध है, किन्तु ये विचार उपन्यास का प्रमुख प्रतिपाद्य नहीं बने है ।

जैनेन्द्रकुमारजी ने " आर्थिक चिन्तन " के लिए उपन्यास में कुछ कमी रही है, लेकिन कहानी में अपेक्षाकृत सफल रहें हैं,

इतना ही नहीं, कुछ कहानियाँ तो अधिक विचारों का प्रतिनिधित्व करनेके लिए ही लिखी गयी है ।

विचार-ग्रन्थों में जैनेन्द्र ने " अर्थ " से संलग्न प्रश्नों पर पर्याप्त विस्तार और गहराई से विचार किया है । उन्होंने अर्थशास्त्री के रूपमें आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण और समाधान प्रस्तुत करते दिखाई देता हैं । जैनेन्द्र के विचार गाँधी की आर्थिक नीतियों से इतने अधिक प्रभावित है, कि गांधी नीति को छोडकर उनका कोई स्वतंत्र स्थान निर्धारित करना अनुचित होगा । गाँधी के ही समाज आर्थिक समस्याओं को धर्म या अध्यात्म के माध्यम से सुलझाने का प्रस्ताव जैनेन्द्र भी करते हैं । उनका विचार है, कि धर्म भौतिक समस्याओं से जुडा नहीं रहता । पारमार्थिक रुचि और वृत्ति के लोग ही आर्थिक समस्याओं के लिए ठोस समाधान दे सकते हैं ।

[अ] <u>मुक्ति बोध</u> :- " मुक्ति बोध " का नायक सहाय महत्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्ति है । वय के साथ साथ पद, प्रतिष्ठा तथा पैसे से विरक्ति तथा श्रम, सादगी और अपरिग्रह के प्रति आसक्ति का भाव उसके मन में वृध्दि पाने लगा है । शायद जैनेन्द्रकुमार को जीवन के उचित मूल्य यही लगे होंगे । यही कारण है, कि वृध्दावस्था में जब मनुष्य जीवन के यथार्थ अनुभव प्राप्त कर लेता

है, इन मूल्यों की ओर अधिक आग्रही होता है। सहाय मन्त्रिपद के दायित्वों और अधिकारों से मुक्त हो गाँव में रहकर कृषि द्वारा जीवन यापन का " सुख " प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु एक तो अभी उनके अपने मन में संशय है, दूसरे परिवार के सब सदस्य भी उनके इस निर्णय के विरुद्ध हैं। उनके राजनीतिक पद के साथ पैसे का प्रश्न जुड़ा है। साथ ही परिवार के हर सदस्य का स्वार्थ किन्तु सहाय का भावनात्मक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था के इस अनौचित्य को स्वीकार नहीं कर पाता।

पैसे से विरक्ति का दर्शन जैनेन्द्र के आर्थिक चिन्तन का अत्यन्त प्रमुख अंग है। इसके मार्ग में आनेवाली व्यावहारिक कठिनाइयों का उल्लेख उपन्यास में हर जगह मिलता है। " मुक्तिबोध " में नीला के माध्यम से समाज में पैसे की प्रचुरता से प्राप्त होनेवाली सुविधाओं और सामर्थ्य का परिचय दिया गया है, " पैसे की इफरात से पैसे का अभाव कभी बढ़कर नहीं हो सकता। तुम अपने को शाबाशी देना चाहते होगे, इस बात पर कि मौके आये और पैसा तुमने पास नहीं लिया। " १

कुँवर को पैसे की सहूलत न होती और अंजलि बिन ब्याही होती तो वह भी आज तुम्हारे लिए सरदर्द बनी होती है। वह कहती है, कि, " मैं तुम्हारे लिए बेकार हूँ ? नहीं हूँ बेकार, तो किस लिए नहीं हूँ ? इसलिए कि पैसे की कमी नहीं है, क्योंकि छोटी-मोटी फिकरें मुझसे दूर रह जाती है, और मेरी तंदुरुस्ती को जरा भी कुतर नहीं पातीं और मैं खयाल की उन ऊँचाइयों पर पहुँच सकती और ठहर सकती हूँ, जो तुम्हें पसन्द है। " २

---

१. " मुक्तिबोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १३१।
२. " मुक्तिबोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ. ६२।

पैसे की शक्ति का यह सत्य पैसे सेविरक्ति के दर्शन की जड़ें हिला देता है । सहाय ऐसेविकल्प की खोज में है, जहाँ जीवन पैसे की आवश्यकताओं से मुक्त हो, किन्तु नीला उसके सामने अत्यन्त व्यावहारिक जीवन-दर्शन रखती है, " एक ही रास्ता है, कि, पैसे के बारे में सोचो ही नहीं । उसे खर्च किए जाओ । जरा वह ठहरेगा कि उसके बारे में सोचना पड जायेगा । मैं यही करती हूँ, जरा नहीं सोचती पैसे के बारे में । बेदर्दी से खर्च करती हूँ, क्यों, कि बडी खराब चीज है, यह पैसा । मजबूर करता है, कि, उसके बारे में सोचो, और सोचा कि रुके । " १

नीला जैसी प्रेमिका, पत्नी, पुत्र, पुत्री, दामाद, मित्र तथा शुभाकांक्षी ऐसी अनेक व्यावहारिक बाधाएँ सहाय के मार्ग में ला खडी करते हैं, और वह " मुक्ति " के बोध को पाकर भी मुक्त नहीं हो पाता । सहाय मन्त्री-पद का त्याग करके गाँव के आकर्षण के कारण कृषि में विकास करना चाहता है, मगर ये सब लोग स्वार्थ से पैसे के साथ जुडे रहने कारण वह असफल बन जाता है ।

संक्षेप में यहाँ जैनेन्द्रकुमारजी ने पैसे से सम्बन्धित बहुत बातें बताने का प्रयास किया है । कुंवर-अंजली, सहाय- सब हितचिन्तक, वे कौन कौनसे कारणों से बाधा उपस्थित करते हैं, या पैसे के कारण उन में अहम कैसा पैदा हो जाता है । बाद में पैसा यह खराब चीज है, यह भी उनके ध्यान में आ गया है, यह मालूम होता है ।

---

१ ". " मुक्तिबोध " - जैनेन्द्रकुमार पृ.

[ब] " अनन्तर "

जैनेन्द्रकुमारजी ने " अनन्तर " में आर्थिक रूप से अत्यन्त समृध्द समाज की कहानी कही है । भारतीय समाज के इस अल्प वर्ग की बात कहते हुए जैनेन्द्र इस तथ्य के प्रति बडे सजग है, कि भारत की बहुसंख्या जनता की यथार्थ आर्थिक स्थिति-भूख और गरीबी का परिचय इसमें नहीं है ।१.

" अनन्तर " में चित्रित वर्ग, धानिक वर्ग ही नहीं हैं, वह धन की शक्ति से पूर्ण तथा परिचित भी है । धन के व्यय-अपव्यय की चिन्ता उनके लिए अवश्यक नहीं हैं, क्यों कि वे जानते हैं, कि " बरबाद के सिवा रूपया कभी कुछ और नहीं होता । " २. व्यवहार में वे अर्थ उपेक्षा नहीं कर पाते, " पत्नी और परिवार होते ही पैसा सब कुछ हो जाता हैं । सभ्यता और सफलता के संसार का पारा दारोमदार जो एक उसपर है । इसमें सार शास्त्र बन उठा है अर्थशास्त्र " ३.

---

१. " अनन्तर " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १४७ ।
२. " अनन्तर " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १३ ।
३. " अनन्तर " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १४ ।

अर्थ की शक्ति को उद्घोषा करने वाली बहुतसी उक्तियाँ उपन्यास में बिखरी हुई है, वह निम्नलिखित -

[क] " रुपये-पैसे के क्षेत्र में जो सफल हो सकता है, परिवार के क्षेत्र में उसके असफल रहने की संभावना नहीं रहती ।" १

[ख] " देखती है, पैसा वह किस तरह बहाता है । चारु उससे से अपने को हर तरह समर्थ और उपयोगी बना सकती है " २

[ग] " पैसा समाज के शरीर का प्रवाही रक्त है, क्यों कि, उसपर सरकारी मुहर है । मुहर की वजह से कोरा कागज भी कितनी कीमत का हो जाता है ।" ३

धन की इसी शक्ति के कारण पारस्पारिक व्यक्तिगत सम्बन्ध भी धन के आधार पर बनतें और बिगडते हैं । धन की प्रति हमारी कामना उसका गौरव और बढा देती है, इतना ही नहीं धनवान इसी गर्व से धनाकांक्षी को हीन दृष्टि से देख सकता है । जैनेन्द्रजी ने " मुक्ति-बोध " उपन्यास में यही बतानेका प्रयास किया है, कि धन यही सब कुछ है, मगर इसी धन से धनी का गर्व और अहंकार, स्वत्व की भावना, तो अनुचित है ही, साथ ही साथ इसका नतीजा यह होता है, कि धनाभाव में हीनता भाव भी उपयुक्त नहीं है । धन का सार्थक उपयोग समाज सेवा में हैं । अन्यथा पूंजीपतियों के पास तो अतिरेक के कारण व्यर्थ ही नष्ट होता है " । ४

---

१. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. २५ ।
२. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. ७७ ।
३. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. १०१ ।
४. " अनन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. ७१ ।

जैनेन्द्रकुमार जी ने कल्याणी के समान " अनन्तर " में भी अर्थ नैतिक उपयोग के लिए कन्या द्वारा शान्तिधाम की स्थापना का प्रसंग रखा है, किन्तु वादगत सरकारी साम्य से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

कन्या को इस धाम की स्थापना के लिए एक लाख रुपये की आवश्यकता है । यह पैसा बड़े-बड़े उद्योग पतियों से ही प्राप्त किया जा सकता है । पैसेवालों को ऐसे कार्य में कोई श्रद्धा नहीं होती । अत: यदि वे धन देते है, तो उसमें भी उनका कोई स्वार्थ हैं । आदित्य से पैसा प्राप्त करने के लिए अपरा के प्रति आदित्य के आकर्षण तथा श्वसुर के प्रति आदर भाव का लाभ उठाने के लिए अपरा और बाबूजी को माध्यम बनाया जाता है ।

यहाँ जैनेन्द्रकुमारजी ने पैसे के साथ इन्सान का सम्बन्ध किस तरह जुड़ा हुआ है, यह बताने का उचित प्रयोग किया है । साथ ही साथ पैसा जो है, उसका उपयोग किसी अच्छे काम के लिए उपयोग में लाना चाहते हैं, क्यों कि अतिरेक पैसे से आर्थिक वैषम्य दूर हो जाता है, और आर्थिक समृध्दि से मानव समाज की उन्नति नहीं होती है, वास्तविक उन्नत्ति तो नैतिक है, अत: हमें अर्थ और नीतिका समन्वय करके चलना होगा, ताकि, इस अर्थ का दुरुपयोग न हो जाय । आर्थिक प्रतिस्पर्धा आज संसार की प्रगति के लिए अनिवार्य हो गयी है, किन्तु प्रगति धन संचय में नहीं, धन-त्याग में होनी चाहिए । जैनेन्द्रकुमारजी ने आश्रम की स्थापना का उद्देश्य शायद गरीबों और पूंजीपतियों इनके दोनों के हित के लिए ही है । भौतिक समृध्दि के अतिरेक से त्रास्त लोगों के लिए यह अध्यात्म मार्ग उपयोगी हो सकता है ।

" सुनीता " और " जयवर्धन " के समान शारीरिक श्रम का महत्व " अन्तर " में भी प्रतिपादित किया गया है । मनुष्य को शारीरिक श्रम से मुक्त होकर मशीनों पर निर्भर रहना इसको जैनेन्द्र विरोध करते हैं ।

संक्षेप में जैनेन्द्रजी ने "अन्तर" इस उपन्यास मे अर्थ और उसकी प्राप्ति के लिए श्रम और उस पैसे का सदुपयोग आदि महत्वपूर्ण विचार बताये ~~केन~~ अलावा नारी की आर्थिक स्वातंत्र्य का विरोध उन्होंने किया है । "अन्तर" में यही बात महत्वपूर्ण है । चारु के नौकरी करके आर्थिक रूपसे स्वतंत्र होने के प्रस्ताव का विरोध करते हुए प्रसाद कहता है, "दो-दो, तीन-तीन हजार रुपये पाने वाले तो तेरे इतने नौकर है, और तू ऐसा कहती है, नौकरी से यही तो होता है, कि आदमी कमाई के बूते अपने को आझाद मान लेता है । तुम भी अपने को आझाद समझो । पैसे का उसके कोई दबाव न मानो|" १ आर्थिक स्वातंत्र्य पत्नी की समस्याओं का समाधान नहीं है, उसके लिए नारी में सहनशीलता, समर्पण अपेक्षित है, इसपर भी यदि मानसिक उद्वेलन अथवा तनाव की स्थिति निर्माण होने की संभावना है ।

इस प्रकार जैनेन्द्रजी ने अध्यात्म तथा लोक सेवा धनी वर्ग के शौक का क्षेत्र है, और उनके अतिरिक्त पैसे के सदुपयोग का साधन हो, जिसमें जरुरतमन्दों का हित भी निहित है । इस चिन्तन में अपनी निर्धनता में भी निर्धन समाज, धनिकों के एक अभाव की पूर्ति करता है । वह धनि कों के खाली समय को भरने तथा उनके मन बहलाने का एक साधन मात्र है । यही जैनेन्द्रजी ने आर्थिक समस्याएँ निर्माण होने की जादा संभावना बतायी है ।

---

१. " अन्तर " जैनेन्द्रकुमार पृ. १२८.

[क] अनामस्वामी :-

" कल्याणी " और " अनन्तर " में जिस प्रकार के आश्रम की स्थापना के प्रयत्न थे, " अनामस्वामी " में उस आश्रम की स्थापना हुई है । इस आश्रम के अर्थ-तन्त्र का परिचय भी दिया गया है । आश्रम के पास कृषि के लिए पाँचेक एकड़ जमीन है । एक स्वावलंबी गोशाला, आत्मनिर्भर आतुरालय तथा आय के साधन के तौर पर एक मुद्रणालय है । इस प्रवृत्तियों के संचालक आश्रमवासी ही हैं । आश्रम के लिए शेष आवश्यकताएँ चन्दे से पूरी की जाती है । १ आश्रम को प्रत्येक व्यक्ति तथा संस्था प्रदत्त अनुदान स्वीकार्य है, " गलत होने का रुपये को अधिकार कहाँ है । वह अधिकार सिर्फ आदमी का । " २ किन्तु अनुदान के लिए न तो याचना उचित है न प्राप्त धनका तिरस्कार । इसी से अनामस्वामी अमरीकी संस्थान द्वारा प्रेषित धान के सम्बन्ध में टिप्पणी करता है, " अमरीका के पास भिक्षार्थी, शरणार्थी होकर जाय वह डरे । मैं निडर रह सकता हूँ । इसलिए माँगता नहीं, न तिरस्कार ही कर सकता हूँ । पैसा आधिपत्य का माध्यम हैं । " ३

---

१. " अनामस्वामी " जैनेन्द्रकुमार पृ. २१७ ।
२. " अनामस्वामी " जैनेन्द्रकुमार पृ. २३६ ।
३. " अनामस्वामी " जैनेन्द्रकुमार पृ. २३७ ।

आश्रम की आय और आवश्यकताओं का मुख्य साधन कृषि है । "मुक्तिबोध" के ही समान कृषि का महत्व " अनामस्वामी " में भी प्रतिपादन किया गया है, " जमीन की सफलता उपजाने में है । यों महल चिनिये, कारखाने खडे कीजिए, दूसरी क्रान्ति वगैरा की कार्यवाहीया चलाइये-धरती कुछ नहीं कहेगी । सब सहती जायेगी । पर धरती के साथ सहज और प्रथम न्याय वह नहीं माना जाएगा " ४

कृषि के साथ श्रम का महत्व स्वयमेव सिध्द हो जाता है । अनामस्वामी धन की सार्थकता श्रम के कारण ही स्वीकार करते हैं, अन्यथा धन तो मिथ्या है, " मुझे धन मिथ्या और श्रम सत्य मालूम होता है । धन में उपयागिता है, तो इस अपेक्षा से वह श्रम का प्रतिक है । श्रम का साथ छूटा कि सिक्का कोरे झूट का साधन हो जाता है ।

अर्थ की उस उपयोगिता अथवा शक्ति का जैनेन्द्र स्पष्ट विरोध करते हैं, जो मानव के पारस्पारिक सम्बन्धों तथा नैतिकता को आश्रित कर देती है । विदेश में स्थित एक युवक आर्थिक कारणों से दो पतियों की एक ही पत्नी की संगतता का तर्क रहता है । " १ इसलिए धन-विरोध की यह प्रवृत्ति जैनेन्द्र-चिन्तन की प्रमुख विशेषता है । अनामस्वामी के विचारों के माध्यम से जैनेन्द्र ने इसे पर्याप्त स्पष्ट रूप से कहा है । धन शरीर पर लगी मैल के सदृश है, किन्तु उससे मनुष्य की मुक्ति तभी संभव है, जब धन स्वयं ही बोझ लगने लगे । तब तक धन में तृष्णा है, वह छूट नहीं सकता ।

" धन छोडने से नहीं छूटेगा, सिर्फ द्वन्द ही हाथ आयेगा । " २

---

४. "अनामस्वामी" जैनेन्द्रकुमार पृ. १६९ ।

१.] "अनामस्वामी" जैनेन्द्रकुमार
२.] पृ. २०६, १८.

इसका मतलब यह है, कि बाह्य प्रेरणा अथवा दबाव से मनुष्य धन छोडने को तैयार नहीं हो सकता । अपरिग्रह की यह वृत्ति आंतरिक प्रेरणा द्वारा ही संभव है ।

इस तरह समाज में उन्नति के अलावा अनुन्नती ही दिखाई देती है, मनुष्य धन से उन्नति नहीं प्राप्त कर सकता तो उसकी नैतिक उन्नति आवश्यक है, जिससे वह समृध्द हो सकता है । और इसलिए " अनामस्वामी " में इन तमाम उदाहरणों से यह सिध्द होता है, कि भौतिकवादी दृष्टियों से आदमी जीवन में सफलता नहीं प्राप्त कर सकता । यानी पैसों से वह सुखी सिर्फ हो सकता है, लेकिन समाधानी नहीं हो सकता । समाधान मिलने के लिए अध्यात्मता, नैतिकता चाहिए ।

[ड] " दशार्क " :-

जैनेन्द्रजी ने " दशार्क " में प्रेम की शाश्वत समस्या को उठाया और मूल नैतिक स्तर पर उसकी गहरी खुदाई की है । साथ ही साथ पैसों की समस्या भी आ जुडी है । नया आयाम खोला है, प्यार हो या पैसा । आज के जितने भी प्रश्न हैं, समाज के, राष्ट्र के, अन्तर्राष्ट्रीय, पैसे की लेन-देन से उत्पन्न विविध रूप हैं । पैसे का मान इतना बढ गया है, कि आदमी उसे कमाने, कमाते जाने में जीवन बिता देता है । प्रेम को भोग के रूप में लेकर ही उसे जीना पडता है, वहाँ तृप्ति कहाँ रखी है ? कामना का देश कभी नहीं कटता । यह सब पैसे की माया है । जड पैसे की नहीं, पैसे की संख्या की माया है । "दशार्क" में जैनेन्द्र ने सामाजिक समस्याएँ बताते वक्त इसी समस्या में आर्थिक समस्या आ जाती है, उसपर आधारित पूरा उपन्यास है । उपन्यास के प्रारंभ से अन्त तक आर्थिक समस्या ही दिखाई देती है ।

रंजना और शेखर का परिवार टूटने का आर्थिक ही कारण है । रंजना मानिकलाल सेठ का संघर्ष, पाँच लाख रूपयें यानी पैसे से ही सम्बन्धित है । माधव जो स्मगलर रंजना के यहाँ नोटों के गड्डियाँ तीन हजार की फेंककर जाता है, मेहन्दी, सकिना, मालती, रंजना पैसों के कारण ही वेश्याएँ बन गयी हैं । गृहमन्त्री के परिवार का बिखराव का कारण आर्थिक ही है । रंजना के पास आनेवाले, पुलिस पैसे के लिए ही आते है, वे माधव के दिए हुए पैसे के बारे में सोचते है, पूछते है । सचिव का सहायक बिना पैसे से लाभ उठाना चाहता है, इससे रंजना के साथ झगडा होकर रंजना को मारपीट करता है । यानी जैनेन्द्रजी ने तमाम प्रसंग के माध्यम से यही बताया है, कि कहीं पैसे की कमी, तो कहीं जादा, लेकिन सवाल पैसे का ही हैं ।

समाज में पैसे के कारण जो तीन वर्ग बन गये हैं, निम्नवर्ग, मध्यमवर्ग, और उच्चवर्ग । इसमें निम्नवर्ग के लोगों को पेट भार खाना नहीं मिलता, शारीर ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र नहीं, धूप, वर्षा से बचने के लिए घर नहीं, उन्हों ने सिर्फ मानव शारीर धारण करने के अलावा कुछ नहीं इसलिए उन्हें मानव की संज्ञा प्राप्त होती है, अन्यथा उनका जीवन पशु-पक्षियों के जीवन से भी गया बीता होता है । दूसरे वर्ग का सवाल नहीं, वे सामान्य रूप से रहते है, मगर आर्थिक समस्या हमेशा सताती है, और रहा तीसरा उच्च वर्ग, उसके पास धन का अभाव नहीं रहने के कारण बडी हवेलियाँ, पहनने के लिए मुलायम रेशामी वस्त्र, खाने के लिए मिठाई, घूमने के लिए मोटर गाडी, नौकर चाकर आदि ।

जैनेन्द्रजी ने यहाँ निम्न वर्ग के रूप में मेहन्दी, सकिना, मालती, पारमिता, कालीचरण, आदि दिखायें हैं, जो बन्द के समय भूखे मरते

है, मकान किराये का है, पारमिता तो आदिवासी है, जंगल में रहती हैं ।
उच्चवर्ग का प्रतिनिधि पात्र मानिकलाल सेठ और उसकी पत्नी मधुरिमा
है । इस सेठ के पास किसी भी चीज की कमी नहीं है । वह चार मिल
का मालिक है, यानी जैसा पैसा उसके पास है । और इसलिए पाँच लाख
रुपये देकर रंजना को उपलब्ध कराना चाहता है, रंजना इससे इन्कार करती
है, तो उसके खिलाफ क्या क्या नहीं करता सब पैसे को वजह से । ये
उच्चतम वर्ग के लोग पैसे के कारण निम्नवर्ग के लोगों को धमकाते हैं, उन पर
अन्याय, अत्याचार करते हैं, दु:ख पहुँचाते हैं । और उनका जीवन दयनीय
कर देते हैं । और उस से खुद खुश हो जाते हैं, जब बन्द, आन्दोलन में
रंजना के बिरादरी के सब लोग भूखो मर रहे हैं, तभी सेठ के पास रंजना
एक बडे हॉटल में मिलने जाती है, और एक लाख रुपये माँगती है, तो
मानिकलाल शराब पीकर रंजना को पैसे तो देता नहीं, बल्कि, उसकी बहुत
मारपीट करता है, वस्त्र इधर-उधर बिखरते हैं, बाल बिखरतें हैं, रंजना
को सिर्फ मार खाकर बिना पैसे वापस लौटना पडता है, यानी एक अमीर
आदमी से भूखो लोगों के लिए पैसे माँगने पर उच्चवर्ग के प्रतिनिधि ने यह
व्यवहार उसके साथ किया है । यही इस उपन्यास का महत्वपूर्ण उद्देश
है ।

उपन्यास में उल्लिखित कुछ प्रसंग निम्नलिखित हैं । -

शेखर चिढकर पत्नीसे - " बनना छोडो । बहुत देखता आ रहा
हूँ । अब नहीं हो सकता । लेक्चरर की औकात भला तुम्हारे बाप की
निगाह में क्या हैं ? हजार रुपया कुछ चीज है - तुम्हारे नजदीक ? " १

---

१. " जैनेन्द्रकुमार "दशार्क " पृ. ४.

अधिकारी और रंजना में बातचीत, " बकवास छोडो, क्या इस नीचता में तुम्हे शर्म नहीं आती है ? रंजना कहती है, " सुनती हूँ शर्म की जरुरत है, पर मुझे तो नहीं हुई । शर्म किसकी ? शरीर की ? पुरुष की ? समाज की ? राज की ? नीतिकी ? किसकी शर्म । अधिकारी कहता है, शरीर बेचती हो और बातें बनाती हो । रंजना कहती है, बताइए और क्या है मेरे पास जा बेचूं । रुपया तो सबका चाहिए । कुछ देकर ही वह कमाया जाता है । अधिकारी जब चोर की तलाश में रंजना के पास आते हैं तब की बातचीत, " हमने उस आदमी पर दस हजार इनाम रखा हैं, लेकिन अब मैं उसे पकड नहीं सकता । जो ऐसा खत लिखाता है, उसे दूसरी बडी जेल क्या हो सकती है, लेकिन शायद मुझे इस काम का इस्तीफा देना होगा । पर तुम कैसे अपने को दे सकी उस आदमी को ? सिर्फ रुपया ? हाँ, सिर्फ रुपया । आपको याद रखना चाहिए कि मैं रण्डी हूँ । पढी-लिखी हूँ । सब तरह की बाते छाट सकती हूँ । पर हूँ बाजार में । अपने को देने से इन्कार करके जिउंगी कैसे ?, कसूर मेरा नहीं, . अगर उसने मुझे लिया नहीं । अधिकारी कहते हैं, और वह रुपया तुम रखोगी ? रंजना कहती है, रुपया छोड दूँ, अधिकारी कहता है, तुम समझदार लगती हो । पापका रुपया । रंजना कहती है, जी नहीं रुपया चान्दी का होता है । सोने का भी होता है । कागज का होने से - सोने-चान्दी के हिसाब में उसकी कीमत और बढ जाती है । " २ [1]

---

1 जैनेन्द्रकुमार , " दशार्क " पृ. २३, २४ ।

[४] राजनीतिक समस्याएँ :-

जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों में समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों के चित्रण का तो पूर्णतः अभाव रहा है, या वह अत्यन्त गौण रूप में प्रस्तुत हो सका है । यही स्थिति कहानियों की भी है । ऐसा जैनेन्द्रकुमारजी राजनीति में विशेष उन्हें रुचि नहीं है । उस सम्बन्ध में उन्होंने विशेष चिन्तन नहीं किया है । आरंभिक उपन्यासों में निश्चय ही जैनेन्द्र राजनीति की उपेक्षा करते रहे हैं । किन्तु अपने आर्थिक और राजनीतिक विचारों को उन्होंने " जयवर्धन " में प्रमुख प्रतिपाद्य के रूपमें प्रस्तुत किया है ।

उनका " जयवर्धन " अन्य उपन्यासों में से विषय वस्तु की दृष्टि से सर्वथा भिन्न और विशिष्ट रचना है । अपने राजनीतिक आदर्शों को " जयवर्धन " उपन्यास के रूपमें देने का प्रयत्न किया है ।

साथ ही साथ " मुक्तिबोध " में समकालीन राजनीति का स्वार्थ-प्रधान रूप प्रस्तुत किया है । जैनेन्द्रजीकी " जनार्दन की रानी " तथा " काल-धर्म " आदि कहानियों की रचना प्रमुखतः राजनीतिक विचार के स्पष्टीकरण के लिए ही की गयी है ।। यह तो निश्चित ही है, कि राजनीतिक चिन्तन की ओर प्रवृत्ति, जैनेन्द्र की स्वातन्त्र्योत्तर रचनाओं में ही अधिक लक्षित होती है । जैनेन्द्रकुमार के कलाकार में चिन्तक वृत्ति की उत्तरोत्तर वृध्दि होती गयी है, अतः उनके चिन्तन-

ग्रन्थों में राजनीति उपेक्षित नहीं रही है । दैनिक समाचार-पत्रों के लिए नियमित स्तम्भ के अन्तर्गत लिखे गये लेखों से स्पष्ट हो जाता है, कि जैनेन्द्र का कलाकार वर्तमान राजनीति में भी पर्याप्त रुचि रखता है । अनेक राजनीतिक प्रश्न " प्रस्तुत प्रश्न " "प्रश्न और प्रश्न ", "समय और हम " तथा " सम, समस्या और सिध्दान्त " के प्रश्नोत्तरों में उत्तरित हुए हैं ।

अत: उनका राजनीति - सम्बन्धी चिन्तन अत्यन्त प्रत्यक्ष एवं विस्तृत रूपमें उपलब्ध है । जैनेन्द्र का राजनीतिक - चिन्तन सर्वांशत: गाँधी के आदर्शों से अनुप्रेरित है । राजनीति में अध्यात्म का समावेश , गान्धी की अत्यन्त महत्वपूर्ण देन है । जैनेन्द्र की आध्यात्मिक वृत्ति के लिए गाँधी का चिन्तन अत्यन्त अनुकूल पडता हैं, इसी से उन्होंने मुक्त कंठ से गांधी की प्रशंसा करते हुए, इस क्षेत्र में उनके चिन्तन को पूर्णत: स्वीकार किया है ।

[अ] " मुक्तिबोध " :-

" मुक्तिबोध " का प्रधान पात्र मि. सहाय पचपन वर्ष की आयु का प्रौढ है । वह राज्य के मंत्री-पद पर आरूढ लोकप्रिय नेता है । वह बाद में पद त्याग करने के लिए तैयार होता है । उसकी मानसिक स्थिति ऐसी क्यों हो गयी वह सच्चा लोक प्रतिनिधि है,

या मंत्री-पद मिलने पर लोगों को फँसाने वाला है, या फँसाकर अब इस्तीफा देने के लिए तैयार हुआ है । घरवाले सब लोग विवाहित पुत्री, पुत्र, पत्नी, मित्र, दामाद जो त्यागपत्र देने से रोकते हैं, उनका क्या स्वार्थ हो सकता है, इन तमाम बातों पर सोचना कठिन काम है, और इसलिए जैनेन्द्रजी ने उपन्यास के माध्यम से राजनीतिक स्थिति, राज्यकर्ते लोग, मन्त्रीगण, सरकार इन सभी पर गहरी चोट की हैं । वे कहते हैं, कि यह सब बकवास है, इससे समाज का कुछ भी लाभ नहीं हो सकता । अगर होगा तो नुकसान ही होगा ।

समाज का प्रतिनिधि लोक तंत्र, मन्त्रीगण, सभी का वर्णन जैनेन्द्रकुमार अपने उपन्यास में करते हैं । वे कहते हैं - पात्रों के माध्यम से-

[क] " वोट स्वतंत्र नहीं होती है, स्वतंत्रता से नहीं दी जाती है । वातावरण में दल-प्रचार और, दल-आतंक का ऐसा विकार भारा रहता है, कि वह वोट खुले मन की नहीं हो पातीं । फिर रिवाज प्रतिनिधियों के " खडे होने " या खडे किए जाने का है । खडे होने की तरह आँख उसकी अधिक लगी होती है, जो महत्वाकान्क्षी है । और महत्वाकान्क्षी अनैतिक है । इससे आजकल की चुनाव-प्रथा-नैतिकता को बढाती हुई नहीं देखने में आती । " १

जैनेन्द्रजी ने यह भी बताया गया है कि चुनाव कैसा होता है - चुनाव द्वारा प्रतिनिधित्व को विशेष सार्थक ढंग नहीं मानते,

---

१. प्रस्तुत प्रश्न - जैनेन्द्र पृ. ३२ ।

" वोटों की गिनती द्वारा जो चुने जाने की पध्दती है, क्या उसमें सच्चे प्रतिनिधि बनने की संभावना भी रहती है ? नहीं रहती । ऐसे प्रतिनिधि भी देखने में आते हैं, जिन्हे खबर नहीं कि वे कहाँ के प्रतिनिधि हैं और जहाँ के प्रतिनिधि है, उन्हें खबर नहीं कि हमारा कोई प्रतिनिधि भी है । " २ जनतन्त्र जनता की शक्ति का तन्त्र कहलाता है, किन्तु वर्तमान भ्रष्ट रूप में जनता की असहायता को देखते हुए वह एक तमाशा मात्र बनकर रह गया है । " मुक्तिबोध " में जैनेन्द्र ने इस स्थिति का वर्णन किया है, " अरे भाई, पार्लियामेंट से क्या होता है, बस दो-चार बरस उछल-कूद करने का मौका मिल जाता है । बाहर के लाग देखते रहते हैं, कि हमारा आदमी क्या कर रहा है । इस तरह नकेल तो बाहर हम लोगों के हाथ ही रहती है । नहीं तो जनतन्त्र के माने कुछ नहीं रह जाते हैं । ताकत सरकार के हाथों में हो और बाहर सब कोई असहाय हो जाए तो वह जनतंत्र कहाँ रह जाता है, कोरा तमाशा बन जाता है । " ३

इस तरह जैनेन्द्र ने वोट, प्रतिनिधि, चुनाव आदि विषयों पर अपने यह विचार " मुक्तिबोध " में बताने का प्रयास किया है ।

जिस तरह परिवार में हम बिना किसी चुनाव के एक बुजुर्ग व्यक्ति को अपना प्रमुख बनाते है, उसी प्रकार देश में भी ऐसा ही किया जाता है । चुनाव प्रथा के दोषों को दूर करने के लिए उनका

---

२. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्र पृ. १०४

३. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्र पृ. ३४

सुझाव है कि सामूहिक जीवन में अधिकार की चेतना मंद हो, जिम्मेदारी की भावना प्रधान हो । प्रत्येक व्यक्ति की विवेक-शक्ति इतनी जाग जाय, कि वह किसी दलीय दबाव से आंतकित न हो, या फिर वातावरण में से दलातंक ही क्षीण हो जाय कि व्यक्ति के विवेक में विकार न आये ।" जैनेन्द्रजी का कहना है, कि समाज अगर भीतर से बनता हुआ उठे तो उसे अपने ठीक नेता को पाने में कठिनाई नहीं होगी । सच्चा जनतंत्र भीतर से बनाने की प्रक्रिया से ही प्राप्त किया जा सकता है । "१ ये तमाम बातें जैनेन्द्रजी ने " जयवर्धन " और उन्हीं के राजनीति के लेकर लिखी गयी किताबों में बताया है ।

लोकतंत्र की सफलता के लिए जैनेन्द्र के अनेक सुझाव रहे हैं, जिनके आधार पर वह वास्तविक लोकराज बन सकता है, लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है, कि समाज संचालन के दायित्व पर भेजे गये लोक-प्रतिनिधि लोक से कटे हुए न हों । रहन-सहन उनका सम-सामान्य रहे।" १

" मुक्तिबोध " में जनतंत्र की इन आदर्श स्थितिका उल्लेख करते हुए वर्तमान भ्रष्ट अवस्था के संदर्भ में इसे स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है । सहाय इस स्थिति की व्याख्या प्रस्तुत करता है -

" हम लोग इतने वर्षों से जिनके हित की बात उठाते आये हैं, उनके हित-अहित को समझ क्या सकते हैं, जब तक उनकी जैसी हालत में अपने को न रखें । उपर से उपकारक-सुधारक बनने से तो नहीं चलता है न ? " २

---

१. वृतविवाद भाग - १ जैनेन्द्रकुमार - पृ. ०९

२. " मुक्तिबोध " - जैनेन्द्रकुमार - पृ. ४४

विधान-सभा के विधायकों का कार्य इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना महत्व विधान ने उसे दिया है । जैनेन्द्र के अनुसार विधायक का कार्य सही अर्थों में कोई काम नहीं है - " पार्लियामेन्ट में हमने खासा अच्छा भत्ता अपनेलिए तय कर रखा है । इस सब के लिए बताओ, मैं करता क्या हूँ ? जो करता हूँ उसे कोई काम नहीं कह सकता|" १

गरीब जनता की सेवा के नामपर संसद सदस्य भारी वेतन पाते हैं, और उन्हें अनेक ऐसी सुविधाएँ मिल जाती हैं, कि वे निजी स्वार्थ के लिए पैसा बटोर सकें । जनतंत्र की स्थिति सुधारने के लिए आवश्यक है, राजपर बैठे आदमी का जीवन-स्तर देश औसत आदमी के समान हो - " उसे देखना चाहिए कि यह स्थान धाती है, और उसका लाभ नहीं लिया जा सकता । बल्कि सच पूछों तो, यह ज्यादती है, कि हम अपने पर खर्चने के लिए हजार से ऊपर रुपया पा जाते हैं । जब कि बेचार औसत आदमी जाने कैसे काम चला पाता होगा " २

जैनेन्द्रकुमार जनतंत्र में राज कर्म के महत्व और मूल्यों को निरन्तर कम करने जाने के पक्ष में है, । इस राह से ही वे अन्तिम आदर्श-शासन मुक्त समाज तक पहुँचने की आशा रखते हैं । इस तरह उपर्युक्त सभी उदाहरणों के माध्यम से जैनेन्द्रजी के राजनीतिक चिन्तन "मुक्तिबोध" में दिखाई देता है ।

---

१. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्रकुमार पृ. ५३ ।
२. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्रकुमार पृ. १२१ ।

[ब] " अन्तर " :-

गद्य साहित्य में उपन्यास विधा को महत्वपूर्ण स्थान है, क्यों कि इसमें मानव जीवन के सभी चित्र पेश किये जाते हैं, उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्दजी ने उपन्यास को " मानव जीवन का चित्रमात्र समझता है " । स्वातंत्र्योत्तर काल में और प्रेमचन्दोत्तर काल में उपन्यास के बहुत प्रकार बन गये उस में मनोवैज्ञानिक यह एक उपन्यास का प्रकार आ गया । ऐसे उपन्यासों की निर्मिति करना भी बहुत कठीण काम है । लेकिन बहुत से साहित्यिक निर्माण हो गये । उनमें " जैनेन्द्रकुमार " का स्थान अनन्य साधारण है, उन्होंने बारह उपन्यासों की निर्मिती की है ।

जैनेन्द्रकुमारकेसभी उपन्यास किसी एक ही समस्या को लेकर तैयार नहीं हुये हैं । उसमे जादातर पारिवारिक, सामाजिक समस्याएँ हैं । राजनीतिक समस्याएँ वैसे कम ही दिखाई देते हैं । "जयवर्धन" और " मुक्तिबोध " में राजनैतिक समस्याएँ हैं । " जयवर्धन " में जयवर्धन पूर्व जनसेवा के लिए राजपद आवश्यक माना था, वही बादमें विरोध और षडयन्त्र के कारण राजपद छोडने का निर्णय लेता है । चिदानन्द का विरोध इसलिए था कि वह अविवाहित " इला " के साथ रहा है, जो, कि अनैतिक है । इसके साथ ही साथ इन्द्रमोहन का षडयन्त्र इसलिए था कि जय विश्वासघातकी है । " मुक्तिबोध " में सहाय राजनीति में होनेवाली आपाधापी के कारण मंत्रीपद छोडनाचाहता हैं । क्यों, कि जिस पद को उसने त्याग एवं सेवा पर आधारित समझा था, वही दूसरों को चढाने

की सीढी बन गया I इसलिए सहाय सोचते हैं, " यद्यपि मन में निश्चय बढता जा रहा है, कि मंत्रीत्व काम नहीं होता I तब व्यर्थ ही सही एक व्यस्तता तो थी I अब सार्थकिता की तलाश में एकदम शून्य हुआ बैठा हूँ I " १ छ्६

उपर्युक्त दोनों उपन्यासों में जैनेन्द्रजी के राजनीति सम्बन्धित कुछ बाते आती हैं, लेकिन वैसी कौनसी भी स्थिति या प्रसंग अनन्तर में नहीं है, लेकिन एक बात यहाँ है, वह आधुनिककरण और पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण कुछ सवाल खडे हो गये हैं I वैज्ञानिक अविष्कार जो है, उससे सुख या शान्ति के अलावा दु:ख और अशान्ति की ही जादा संभावना दिखाई देती है I इस उपन्यास में " अपरा " जो केम्ब्रिज से साहित्य में डाक्टरेट प्राप्त करके विलायत में ही " मिस्टर चार्ली " से विवाहित होकर आठ वर्ष के बाद तलाक जित कर वापस आती है, फिर यहाँ प्रसाद के साथ उसका बर्ताव बिलकूल विलायत जैसा ही है I इसके अलावा औद्योगिक के कारण प्रसाद जो दु:खी है, वह अपरा की सहायता पत्नी की तरह माँगता है, राजश्री धर्म पत्नी होते हुए भी I इन तमाम बातों से मालूम होता है, कि, वर्तमान युग अति भौतिकवाद तथा राजनीति से त्रास्त होकर आज का मानव अन्दर ही अन्दर कहीं गहरें में, परस्पर आतंकित है I उसकी आस्थाएँ चरमरा रही हैं I अनीश्वरवादी स्वर उग्र है, तथा समग्र आस्थामूलक नीतियों और परम्पराओं के प्रति विद्रोह खडा किये हुए हैं I परस्पर अनभिज्ञ बने रहना और व्यस्तता के कारण अपने से भी दूर होते हैं, यानी यही आज के मानव की नियति है I और यही स्थिति यहाँ जैनेन्द्रकुमारजी ने

---

६. १. " मुक्तिबोध " जैनेन्द्र - पृ. १३.

" अनन्तर " में बताने का प्रयास किया है । प्रसाद जब अपनी सहायता के लिए अपरा की आवश्यकता बताता है, तभी पत्नी, पुत्र, पुत्री, दामाद कोन भी उसके खिलाफ कुछ नहीं कहतें, इतना ही नहीं उनकी पत्नी राजश्री खुद अपरा को उनके पास जाने के लिए कहती है, और वह ठाकूर के साथ सम्बन्ध रखती है । यानी यहाँ सब लोग भौतिक सुख के पीछे दौड रहे हैं, लेकिन सुखी बन नहीं पातें । इसलिए जैनेन्द्रकुमारजीने इस " भौतिक " बातों को छोडकर " आध्यात्म " मार्ग पर आने का संकेत दिया है । जिस के कारण ऐसे परिवार टूटने की तो संभावना नहीं हैं ।

इस तरह जैनेन्द्रकुमार के " अनन्तर " इस उपन्यास में राजनैतिक कुछ सवाल खडा करने का प्रयास नहीं है बल्कि आधुनिकरण का असर या इंतजाम और इन्सान भौतिक सुख के पीछे दौडने से कैसा दु:खी होता है । और उसके लिए गांधी मार्ग पर लाना यानी आध्यात्मिक विचार बताये गये हैं । जिस में उन लोगों के विचार में परिवर्तन हो जाय । जैसे कि विलायत में एक सुखी दाम्पत्य आठ साल रहते थे, लेकिन मि. चार्ली का कहना था, कि, अपने अपनी व्यवसाय और कर्तव्यमें रहना चाहिए, तो आज के नारी स्वातंत्र्य के कारण असामन्ज्यस्य निर्माण हो गया, और परिवार तलाक के माध्यम से टूटा, यहाँ विचार भिन्नता, और धर्म का नियम यही कारण है । इससे ऐसा ना हो, इसलिए संयम, विवेक शक्ति के लिए गांधी विचार, अध्यात्मकता चाहिए । और यही विचार इसमें बताया है, जिससे मनुष्य के अंदर का अहम खत्म हो जाय । और वह सही रास्ते पर आ जाय ।

[क] अनामस्वामी :-

जैनेन्द्रकुमार का " अनामस्वामी " यह उपन्यास अन्य उपन्यासों में थोडा अलग है, क्यों कि इसका " त्यागपत्र " इस उपन्यास से ताल्लुक है । " त्यागपत्र " के प्रमोद द्वारा जज पद का त्यागपत्र देते समय उसकी मानसिक स्थिति ऐसी क्यों होती है, यह गहन सवाल है । वह बाद में त्यागपत्र देकर उसका बालजीवन के मित्र " प्रबोध " जो अभी " अनामस्वामी " है, उसका एक आश्रम है, वहाँ प्रमोद आता है ।

"त्यागपत्र " उपन्यास का जज बडे पद पर का त्यागपत्र देनेवाला प्रमोद क्यों पद त्याग करता है, यह राजनैतिक सवाल है, और वह आश्रम में आता है, यानी यहाँ उसका कुछ और प्रयोजन होगा । " अनामस्वामी " में वैसी राजनैतिक समस्याएँ नहीं दिखाई देती । "आश्रम की स्थापना " उसमें प्रेम विवाह में असफलता पाने वाले लोग जो अब इस आश्रम के भक्त बन गये हैं ।

"अनामस्वामी " में जैनेन्द्रकुमारजी ने " अन्तर " के तरह ही पारिवारिक समस्या और सामाजिक समस्याओं को ही प्रधानता दी है । इस उपन्यास में भौतिकतावादी दृष्टिकोन के विरुध्द विचार व्यक्त किये है । यहाँ अनामस्वामीका बाल जीवन का मित्र प्रमोद जो अभी सर पी. दयाल अपने बीते जीवन के आघातों के कारण यानी उसकी बुआ मृणाल के मृत्यु से दु:खी हैं । मृणाल जीवन पर्यन्त भौतिक साधनों के अभाव में घुलती रहीं और सर.पी. दयाल साधनों की सम्पन्नता में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थें । मृणाल को जीवन में कहीं प्रतिष्ठा नहीं मिली । सभी जगह उसे धिक्कारा गया, उसे

धोका दिया गया । अब मृणाल बुआ के जीवन की तुलना वह अपने जीवन से कर रहा हैं ।

वह अनुभव करता है, मैं जीवन के दिन ढो रहा हूँ और दिन मुझे ढो रहे हैं । या तो कभी आत्मगर्व था, या अब आत्म-ग्लानि है । सोचता हूँ, सम-भाव भी मुझे कभी मिलेगा ? ईश्वमय जीवन की कल्पना उसमें उठती है । इन स्वामी से तो वह मूर्त हो रहती है । पर जिन्दगी का क्या करू, जो श्रध्दा पर नहीं, धन पर चल रही है ? कोठी है, स्वजन-परिजन है, नौकर-चाकर है, मान-प्रतिष्ठा है, पत्रा-पुस्तकें हैं । क्या सब कुछ बाधा नहीं है ? परिग्रह नहीं हैं । "१

सर पी. दयाल विगत जीवन की अपनी उपलाब्धियों से सन्तुष्ट नहीं हैं । वर्तमान अवस्था में वह प्रायश्चित की भावना से पीडित होकर भविष्य के लिए चिन्तक हैं । वे अध्यात्मिक भावनाओं से प्रेरित होकर अनामस्वामी के आश्रम में जाते हैं । जैनेन्द्रकुमारजी ने "अनामस्वामी" उपन्यास में यही बताने का प्रयास किया है, कि, औद्योकिकरण से मनुष्य सुखी होता है, या दु:खी होता है ? उसकी बुआ मृणाल की जवानी में कुछ गलती हो गयी थी, और उसी कारण समाज ने कैसा अन्याय किया था । और उसमें ही उसकी मृत्यु हो गयी है, और उसका परिणाम सर पी. दयाल पर हुआ है, और इसी कारण उसने जज पद का त्यागपत्रा दिया है, उसको किसी भी बात की कमी नहीं, फिर भी दु:खी क्यों ? वह क्या खोज रहा है ? भविष्य के बारे में क्या सोच रहा है ? यही

१. " अनामस्वामी " - जैनेन्द्रकुमार पृ. १०

उपाय उपयुक्त हैं, क्या ? आदि सवाल महत्वपूर्ण हैं । इसका उत्तर एक ही है और वह गांधीवाद या आध्यात्मिक मार्ग जिसमें अहम, प्रतिष्ठा, गर्व, काम, वासना, स्वार्थ कुछ नही रहता । वही सही मार्ग हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास में जैनेन्द्रकुमारजी ने भौतिकवादी दृष्टियों से मनुष्य की हालत कैसी बनती है, यह सर.पी.दयाल के बीते जीवन के द्वारा बताया है, लेकिन अभी भी उसके सवाल और भी बढ गये है, कम नहीं हैं । उसके विधवा पुत्री अंजु की पुत्री " उदिता" वह पाश्चात्य के अन्धानुकरन में कैसी फँसी हुई है, यह भी बताया है । उसे दयाल " अनामस्वामी " के आश्रम में लाते हैं, लेकिन वह शंकर उपाध्याय से प्रेरित होने के कारण वहाँ आने को तैयार नहीं है ।

उपन्यास में शंकर उपाध्याय यह भी एक ऐसा पात्र हैं, जो हमेशा द्विधावस्था में रहता है । वह आश्रम और अनामस्वामी सब से ईर्षा करता है, क्यों, कि वह वसुन्धरा को चाहता था, लेकिन कुछ कारणावश वसुन्धरा का विवाह " कुमार " से हुआ है, और कुमार अनामस्वामी के आश्रम का भक्त है । इसलिए शंकर उपाध्याय आश्रम अनामस्वामी, वसुन्धरा, कुमार सब के खिलाफ है । वह भारतीय विवाह संस्था के विरुध्द आवाज उठाता है । बाद में वह अन्यत्र विवाह करता है, लेकिन शान्ति के अलावा दुःखी, अशान्त बनता है । बादमें पत्नी की हत्या करता है । वसुन्धरा को परेशान करता है, उसके पति कुमार को षडयंत्र के कारण लम्बी बीमारी में जाने के लिए प्रयत्न करता है । कुमार बाद में चिन्ताग्रस्त

होकर वसुन्धरा को शंकर उपाध्याय के पास जाकर पुत्रावती होने की इच्छा व्यक्त करता है । शंकर उसे अस्वीकार करता है । फिर एक दिन शंकर वसुन्धरा को जहर की सुई लगा कर उसकी हत्या करता है, खुद भी आत्महत्या करने का प्रयास करता है, लेकिन बच जाता है, फिर आठ साल के बाद मर जाता है । इस तरह यहाँ वसुन्धरा, शंकर उपाध्याय उसकी पत्नी इन तीनों का बुरी तरह अन्त होता हैं, साथ ही साथ कुमार अपना जीवन बीमारी में ही बिताता है ।

संक्षेप में जैनेन्द्रकुमारजी ने " अनामस्वामी " उपन्यास में इन सभी घटनाओं के कारण उनको अपना जीवन किस तरह बिताना पडता है, और क्यों ? उसके लिए बाद में आश्रम के अलावा और कुछ पर्याय नही हैं । यही बताया है ।

आदमी के अन्दर परिवर्तन करना आवश्यक है, मगर हृदय में ही परिवर्तन करने से उसमें दूसरे के प्रति जो द्वेष, नफरत, है वह खत्म होकर प्रेम, सहानुभुति, वात्सल्य से वह व्यवहार करेंगे । और पारिवारिक, सामाजिक समस्याएँ खत्म होने का सवाल नहीं हैं, सवाल निर्माण ही नहीं हो सकतें ।

"अनामस्वामी" में राजनीतिक समस्याएँ वगैरा कुछ नहीं है । भौतिकवादी दृष्टि से मनुष्य में अहम् जादा रहता है । और इसी कारण वह बुरी हरकतें करता रहता है, उसका परिणाम परिवार, समाज पर होता है, इसलिए आश्रम की स्थापना आवश्यक है । जिसके माध्यम से गांधीवादी विचार और आध्यात्मिक विचार बताये जा सके, यही विचार जैनेन्द्रजीने बताने का प्रयास किया है ।

[ड] " दशार्क :-

यह युग राजनीतिक है । भौतिक क्षेत्र की उपलब्धियों का भी उपयोग किया जाता है । वस्तुत: इस युग की जन्मपत्री में राजनीति की महा दिशा चल रही है । राजनीति ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है । भ्रष्टाचार, श्रम के प्रति अनास्था, नैतिक और चारित्रिक पतन आदि मूल्य मानवता का खोल ओढकर सम्मोहक और मायावी सपने प्रतिष्ठित हो चुके हैं । राज्य करने की नीति-अनीति क्या होती, उसके लिए किसके पास समय है ? चुनाव में दल बदल का जादू और दलों का चुनाव हेतु जोड तोड राष्ट्र स्तर पर नंगा नाच करने लगा है । राज्य करने की भूख ऐसी खूँखार हो उठी, कि हत्या की राजनीति का युग चल पडा है ।

राजनीति नीति की धूरी से अपदस्थ होकर निहित स्वार्थों की सिद्धि का षाड्यन्त्र मात्र रह गई है । परिणाम स्वरूप-चारों ओर दंगे, आन्दोलन, घेराव, बन्द, भाषा, जाति, धर्म यह सब और प्रान्त आदि के कारण खडे हुए हैं । स्वतंत्रता के बाद देश में सभी प्रश्नों का सामना करना अनिवार्य हो गया है । जैनेन्द्रजी गांधी-युग के हैं उनकी उनमें गहरी आस्था है । इसलिए हर एक उपन्यास में उन्होंने गांधीवाद बताया है, साथ ही साथ " दशार्क " में तो उन्हों ने आज जो कुछ चल रहा है, बन्द, घेराव, आन्दोलन यह सब अच्छी तरह बताने के साथ ही साथ गांधीवाद अपनाया हैं ।

" दशार्क " में अमीर-गरीब इन्हीं के बीच का संघर्ष बताया है, और राजनीति की समस्या बताने का उचित प्रयास किया है ।

आज देश में जो जन संख्या बढ रही है, उसी कारण मनुष्य को नौकरी मिलने में कठिनाई उत्पन्न हो रही है, अगर नौकरी मिल गयी, तो, विज्ञान के अविष्कार और पाश्चात्यों के अन्धानुकरण के कारण मनुष्य भौतिक सुख के पीछे भागता है, नौकरी में जो वेतन मिलता है, उसी से ये सब बातें अभाव है, तभी वह कम समय में जादा धन प्राप्ति के लिए जुआरी कैसा बनता है, जुऐ में हर बार जीत ही नहीं होती, अगर होंगी तो आशा अतृप्ति के कारण दूबारा खेलता है, हारने बाद जमीन - जायदाद सब बिककर शराबी कैसा बनता है, साथ ही साथ अपने सुखी परिवार का विघटन कैसे करता है, इसको जैनेन्द्रजी ने " शेखर " के माध्यम से बताया है । अगर ऐसे एक एक परिवार खत्म होकर उसका समाज पर असर होता है, समाज पर होने से देश के विकास में कैसी बाधा उपस्थित हो जाती है, यानी यह ज्वलन्त सवाल है । ऐसे परिवार टूटने से वहाँ की नारी बाद में चोर, वेश्या कैसी बनती है, यह बात महत्वपूर्ण है । " दशार्क " में सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ जो बतायी हैं, उससे निश्चित रुप से राजनीतिपर असर होता है ।

इस उपन्यास की नायिका रंजना सुशिक्षित है, लेकिन वह आर्थिक अभाव के कारण सरस्वती से रंजना बनकर लोकरंजन का प्रयोग कर रही हैं । इस समाज में अमीर लोग उसे पाँच लाख रुपये में खरीदना चाहते हैं जब इस बात का इन्कार करने से उसके खिलाफ आवाज उठाया जाता है, अखबार में तस्वीर के साथ बयान आता है, पुलिस, गृहमन्त्री तक उसके यहाँ आते हैं । मानेकलाल सेठ के मकान में व्यवसाय चल रहा है इसलिए वकील से नोटिस मिलती है । मगर मकान का बेनाम मालिक है, जिसके नाम पर

मकान है, वह एक कमरे में ही गरीबी के दिन बिता रहा है, इन अमीर लागों के कानून से बचने के लिए यह भी चाल रहती है । रंजना का वह पूरा भाग " रेड लाईट एरिया " घोषित किया है, बन्द, आन्दोलन हड़ताल ये सब चल रहा है, वेश्याओं का व्यवसाय बन्द रहने से वे भूखो मर रहे हैं । पैसे इन भूखो लोगों के लिए माँगने जब रंजना जाती है, तब सेठ उसको शराब पीकर बहुत मारता है, यह क्या न्याय, इन्साफ है ? समाज सरकार इस बात पर सोचता नहीं । रंजना ने जिनकी बहुत सहायता की है, मगर वे भी उसके खिलाफ उठ रहे हैं ।

उपन्यास में पारमिता उर्फ पम्मी यह नारी पात्र तीन अफसरों का खून करके क्रान्तिकारी बन के जंगल में रहती है । माधवदास जो स्मगलर बन गया है, वह मानेक सेठ को इसके पहले बहुत मदत करता था । इन सभी सवालों पर सोचने पर एक बात समझमें आती है, ये लोग क्रान्तिकारी, स्मगलर, वेश्या क्यों बनते हैं ? इस बारे मे समाज, सरकार की क्या राय है ? ये सभी राजनीतिक सवाल है, इसलिए सब लोग शान्त रहकर अशान्ति पैदा कर दी है । सरकार के प्रतिनिधि, पुलिस, दलाल, मकान मालिक, दादा-लोग सब इन्हीं वेश्याओं से ही पैसे माँगने जाते हैं, अगर पैसे नहीं दिये तो धमकाते हैं, मारपीट करते, उनकी दयनीय स्थिति निर्माण कर देते है, यह क्या ड्रामा है? जो रंजना अपना पति, बेटा छोडकर इस व्यवसाय में आयी है, अपना देह बेचती है, लेकिन सरकार, और समाज ने उसे अपराधी कहा है, इतना ही नहीं, उसको कानूनी गुनहगार बना रखा है । पुलिस वाले उसके पास जाकर स्मगलर को पकडना चाहते हैं, इसलिए उसे परेशान करते हैं, उन में इतनी ताकद है, तो उसे कहीं भी पकड सकते हैं, वहाँ जाकर पकडने से मतलब क्या? इतना ही नहीं, स्मगलर ने रंजना को जो पैसे दिये हैं, वे मांग भी रहे यानी क्या समाजव्यवस्था और क्या राजनीति? समाज की सेवा करनेवाले, रक्षा करनेवाले ही भक्षक बन गये हैं । इस तरह जैनेन्द्रजी ने दशार्क में बहुत सी राजनीतिक बातें बताने का उचित प्रयास किया है ।

[५] समकालीन समस्याएँ :-

स्वातन्त्र्यपूर्व भी साहित्य की निर्मिती होती थी, उस समय साहित्य का उद्देश कुछ अलग था । साहित्यकार का साहित्य में विषय और उद्देश कुछ अलग था । स्वातंत्रता के लिए देशमें चुनौती, प्रेरणा देना वगैरा था । लेकिन भारत स्वातंत्र के बाद उसमें परिवर्तन हो गया । विषय, शिल्प, विचार, चिन्तन सभी में नवीनता आ गयी, यह क्यों हो गया ।

प्रेमचन्द युग में उपन्यास शिल्प, विषय, उद्देश्य अलग थे, अब उपन्यास के प्रकार भी बदलें, उसमें जीवन मूल्य भी कुछ नयें दिखाने लगे । और साहित्यकारों के सामने एक आवाहन रहा । स्वातंत्र भारत में बहुत समस्याओं का निर्माण हुआ है । बेकारी, स्वास्थ्य, निवास-स्थान, बढती हुई जन-संख्या, शिक्षा, पिछडे वर्ग, आदि अनेक समस्याएँ देश की प्रगति को चुनौती दे रही थी । अत: धैर्य एवं प्रबल पुरुषार्थ तथा वैज्ञानिक आधारों पर स्थित आयोजन द्वारा ही इन सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का हल किया जा सकता हैं । भारत सरकार ने बहुत कुछ प्रयास जारी रखने पर भी वस्तुओं का अभाव महँगाई, भ्रष्टाचार आदि समस्याएँ निर्माण हो गयी ।

साथ ही साथ समाज में प्राचीन काल से आयें त्योहार, तलाक जैसी परम्परा, विवाह संस्था, आदि सभी कारणों से भारत में समस्याओं का सागर ही बनने लगा । समाज मे जाति-वर्ग, गरीब-अमीर यह भी निर्माण हो गया हैं । इसलिए साहित्य के माध्यम से साहित्यकार को इन्हीं सभी समस्याओं को बताकर कुछ समाज सुधार का विचार उनके मन में आ गया है । इसलिए आज साहित्य में बहुत से समस्याओंका चित्रण दिखाई देता है, और साहित्यकार का प्रयोजन उसके पीछे समाज सुधार का है ।

[अ] "मुक्तिबोध :-

जैनेन्द्रकुमारजी ने "मुक्तिबोध " में बताये समस्याएँ बहुत सी है । मि. सहाय जो मंत्री पद का इस्तीफा देना चाहता है, लेकिन उसकी विवाहित पुत्री, पुत्र, पत्नी, सगें, मित्र, हितचिन्तक सब विरोध करतें हैं, क्यों कि, सहाय चाहता है, लेकिन इन सभी लोगोंका निजी स्वार्थ हैं, सहाय का उपयोग वे सिढी के अनुसार करना चाहते हैं । साथ ही साथ सहाय को पत्नी के अलावा एक प्रेयसी की आवश्यकता चाहिए । वह कहता है , मैं पत्नी के माध्यम से कुछ नहीं कर सकता लेकिन प्रेयसी " नीलिमा " के कारण बहुत कुछ कर सकता हूँ । वे मंत्री-महोदय पचपन वर्ष आयु के हैं, और नीलिमा पैन्तीस वर्ष आयुकी है, लेकिन वे एक दूसरे को चाहते हैं । यह समस्या आज की समाज में दिखाई देती है । एकाद मंत्री हो, प्रधान मंत्री हो, एम. एल. ए. हो, या पंचायत समिती का सभापति हो, उसके मन में अगर कोई घटना हो गयी और वह नैतिक दृष्टि से खुद को जिम्मेदार कहकर इस्तीफा देने को तैयार होता है, लेकिन उसके मेहमान, पुत्र सभी उसको यह काम नहीं करने देतें हैं । उसका निर्णय बदलने के लिए वैसा इंतजाम करते हैं, रिस्तेदारों का लाभ होता है, इसलिए वे सब इसमें सक्रीय रहते हैं ।

पुत्र वगैरा इस्तीफा देने के विरुध्द रहते हैं, क्यों, कि पिताजी इस बडे पद पर रहने से उन्हीं की भी मान-प्रतिष्ठा बढती है, साथ ही साथ पैसा भी बहुत आता है, और इस कारणावश गन्दे काम करने के लिए तैयार होते है । मिसाल के तौर पर वासनाकाण्ड जैसे प्रकार शुरु होते हैं, अभी समाज में यह प्रचलित है,

महाराष्ट्र में जलगांव, सावंतवाडी, मिरज में यह होता है, यह समाचार पत्रों के द्वारा रोज मालूम होता है । और ये सब लडके अमीर बाप के है, और उनके पिताजी बडे राजकीय पक्षपर अभी मौजूद हैं, यहाँ जादा पैसा दूसरे मार्ग से आता है, और उस पैस्नों का उपयोग इस तरह होता रहता हैं,उसका असर समाज पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता है ।

अभी यह सवाल पद पर रहनेवालों के पुत्र, दामाद या हितचिन्तक को लेकर हो गया । दूसरा सवाल पद पर रहनेवाला राजनैतिक नेता का बर्ताव कैसा रहता है ? " मुक्तिबोध " में सहाय को जिस तरह पत्नी राजश्री के सिवा नीलिमा प्रेयसी के रूप में है, वैसे आज भी इन समाज के प्रतिनिधि, समाज सुधारक इनको भी बहु-पत्नियाँ, या प्रेयसी की नितान्त आवश्यकता रहती है । उसके बगैर वे कुछ नहीं कर पातें ।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किए गये समस्याएँ आज भी जैसी की वैसी ही है, या उससे जादा बढ गयी ही दिखाई देती हैं ।

मि. सहाय प्रेयसी नीलिमा से सम्बन्ध रखता है । और उसकी पत्नी राजश्री भी महादेवसिंह ठाकूर के साथ कुछ अलग सा सम्बन्ध रख लेती है । इसका किसीपर भी कुछ असर नहीं होता । सहाय भी खुश रहता है । वह नीलिमा के साथ घूमने घर के सभी लोग कुछ नहीं कहतें । आज के लोगों के बारे में भी ऐसा ही रहता है, यह सवाल एक संशोधन का ही विषय है ।

संक्षेप में जैनेन्द्रकुमारजी ने हमेशा की तरह घर-बाहर की विषमताओं को त्याग कर व्यक्ति के अन्तर-बाह्य का चित्रण

किया हैं । सहाय की आत्मपीडा, पदत्याग, प्रेयसी, पत्नी का प्रेमी, पुत्र जो लक्षाहिन आदि प्रसंग बतायें हैं । साथ ही साथ पद त्याग करते वक्त विरोध करनेवाले लोगों की संख्या, उनका स्वार्थ आदि महत्वपूर्ण बातों पर जैनेन्द्रजी ने " मुक्तिबोध " में विस्तृत चर्चा - पात्रों और प्रसंगों के माध्यम से की है ।

[ब] " अनन्तर " :-

" अनन्तर " को " जयवर्धन " उपन्यास में प्रकट विचारधारा की विकसित अथवा प्रौढ कृति कहा जा सकता है । यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास का नायक " प्रसाद " अपने पुत्र और पुत्रवधू को मधुपर्व मनाने कि लिए जा रहें हैं, उनको स्टेशन पर विदा करने जाता हैं, और वहाँ से लौटते समय अपने जीवन की व्यर्थता को अनुभव करता है व्यर्थता बोध की स्थिति में वह पलायन का मार्ग अपनाना चाहता है, और अपने गुरु " आनन्दमाधव " और " अपरा " का प्रस्ताव सुनकर माउँट अबू पर उनको ले चलता है । प्रसाद अन्तरमुखी चेतना से ग्रस्त है । जैनेन्द्र ने यहाँ " प्रसाद " को उपन्यास में प्रधान पात्र के रूप में दिखाया है, वह एक ऐसा पात्र है, जो गन्दे किराये के " मकान " में रहता है, किन्तु पुत्र और पुत्रवधू को चार हजार रुपये देकर मधुपर्व मनाने कश्मीर भेजता है । उसका विचार है, कि स्वयं का घर बांधना मानो चैतन्य को बाँध डालना है । सहाय मकान बनाना महा कठिन - प्राय: काम समझाता, लेकिन पुत्र को मधुपर्व मनाने के लिए चार हजार रुपये देता है ।

उपन्यास में प्रधान नारी पात्र है, " अपरा " अपरा का विवाह विलायत में मिस्टर चार्ली से हुआ था । लेकिन पति अपने को व्यवसाय में और पत्नी को कर्तव्य में रखना चाहता था । स्वयं को केन्द्र में, बाकी को परिधि पर रखना चाहता था । तब अपरा अन्य पुरुषों कि ओर उन्मुख हुई । कई टूटे, लेकिन अपरा बनती गयी है । आठ वर्ष का समय विलायत में बिताकर चार्लि से तलाक जीत कर भारत आई । अपरा आरम्भ में भारत से अनमनी हो चली थी, क्यों, कि, भारत नैतिकता में पडा है, और व्यसाय नहीं जानता है । अपरा जब व्यवसायी यूरोप से उब गयी तब उसे भारत की नैतिकता प्रिय लगने लगी । अपरा ने कैम्ब्रिज से लिटरेचर में डाक्टरेट किया है । उसका स्वास्थ्य [illegible] भी दृढ और स्वभाव भी । उसमें अभी परिवर्तन हुआ है ।

जैनेन्द्रकुमारजी ने "अनन्तर " में प्रसाद और विलायत में कुछ दिन बिताई " अपरा " इन दो पात्रों के माध्यम से जा समस्याएँ प्रस्तुत की हैं वह आज के आम आदमी के जीवन में भी वैसी ही हैं । यहाँ प्रसाद का जो प्रसंग दिखाया है, कि वह गन्दे मकान में रहकर मधुपर्व के लिए पुत्र को चार हजार रुपये देता है । और मकान बनाने में कामयाब नहीं होता । तात्पर्य यह झूठा आडंबर है दूसरों को दिखाने के लिए बच्चों को मधुपर्व के लिए कश्मीर भेजता है । रहने का किराये का मकान कैसा भी हो । आधुनिककरणनेआजके आदमी में ऐसा ही परिवर्तन किया है । भौतिक सुख के पीछे लोग भाग रहें हैं, मगर सुखी [illegible] नहीं होते । और प्रसाद का भी वही हाल है, वह स्टेशन पर पुत्र विदा करके आते वक्त उसके मन में अपने जीवन की व्यर्थता का अनुभव करता है, व्यर्थता के कारण पलायन मार्ग को

अपनाना चाहता है । ऐसी स्थिति में उसको आध्यात्म मार्ग पर चलने की आवश्यकता है । " गुरु आनन्दमाधव " उसकी सहायता करते हैं । प्रसाद सब कुछ करता है, खुद के लिए, यानी प्रतिष्ठा के लिए लोगों को दिखाकर भी उसका मन दुःखी है । अपनी व्यर्थता उसे महसूस होती है ।

आज भी वैसा ही दिखाई देता मनुष्य के कौनसा भी महत्वपूर्ण उद्देश्य नहीं है । औद्योगिक क्रान्ति के कारण या विज्ञान के अविष्कार के कारण शहर में आकर कुछ मिलने वाले पगार में घर चलाता है, महँगाई बढ गयी है, किराये के मकान में गुजारा, लेकिन त्योहार बरसगांठ आदि मनाने में वह पीछे नहीं है । इसी कारण असर यही होता है, कि पैसा कम पडता है, फिर दुःख महसूस करता है, यानी प्रसाद और आज का आम आदमी में कुछ भी फर्क नहीं है ।

आम आदमी हमेशा दुःखी रहता है । हररोज के नौकरी पर आना जाना, महँगाई, नगर में रहने के कारण वहाँ के समस्याओं का मुकाबला करना आदि तमाम कारणों से वह दुःखी रहता है ।

" अन्तर " का नारी पात्रा जो " अपरा " जो विलायत में सुखी दाम्पत्य के रूप में आठ वर्ष बिताकर कुछ पारिवारिक टकराव के कारण तलाक जित कर भारत में आयी है । उसपर वहाँ विदेश का अन्धानुकरण और भारत की नैतिकता इसमें असामंजस्य दिखाई देता है, वह विदेश रहकर उसको जो अनुभूति है वह चारु को बताते समय कहती है, कि, " चारु तेरा सुखी जीवन रहना चाहिए, संघर्ष करने से कुछ फायदा नहीं है । पुरुष जाति के विरुध में उसने कहाँ, " अपना बदन बदन दिखाया, जगह जगह निशान पडे हुए थें । " १ और मैं अभी यौन सम्बन्ध कायम करने के लिए अयोग्य हो चूकी हूँ । " १ चारु और आदित्य

के बीच जो झगडा चल रहा है, वह अपरा खत्म करने के लिए मध्यस्था का काम करती है, आदित्य को अपने ओर आकर्षित करके बाद में बीच में से हट जाती है । जैनेन्द्रजी ने यहाँ समाज में पुरूषप्रधान समाज व्यवस्था और स्त्री के प्रति देखानेका दृष्टिकोन इसके कारण तलाक जैसे नियम बनाये गये हैं, लेकिन जिस स्त्री का पूरा यौवन खत्म हो जाने के बाद तलाक देकर उस पर जानवर के तरह व्यवहार करना कितना अशोभनीय है, यह बात महत्वपूर्ण है, और " अपरा " उसका शिकार बन गई है । वह दूसरे किसी का ऐसा जीवन न हो जाए इसलिए अपना प्रयास जारी रखाती है ।

चारु और आदित्य के बीच तनाव खत्म करने के लिए उसे आदित्य को आकर्षित करना पडता है । फिर उनके अन्दर का तनाव खत्म करती है ।

जैनेन्द्र ने बताया गया अपरा का जीवन कितना दु:खी है, तलाक के कारण उसकी स्थिति, विदेश का प्रभाव और भारत की नैतिकता में अन्तर दिखाई देता है । इसमें अपरा सुधार करके सामंजस्या प्रस्थापित करती है, और उसके जैसी दूसरी नारी की स्थिति न हो जाय इसलिए चारु को सब कुछ अपनी अनुभूतीयाँ बतातीहै, लेकिन उसमें उसे सफलता प्राप्त करने के क्या करना चाहिए यह वह सोचकर निर्णय पक्का करती है । पहले आदित्य को आकर्षित करती है।

यानी आज भी समाज में यही स्थिति है, स्त्रियों की स्थिति दर्द भरी बहुत से कारणों होती है, बाल विवाह, अमेलविवाह, दहेज, तलाक, आदि इसका असर यह होता है कि, ऐसी स्त्री गलत रास्ते पर चलती है, वह वेश्या भी बन जाती है, और इसका जिम्मेदार

" समाज " ही रहता है । समाज ही इन सब घटनाओं का उद्घाटक बनता है । " अपरा " जैसी स्थिति समाज में बहुत से नारियों की है । समाज ने उस पर अन्याय किया है । नारी को जिन्दा रहकर भी मरण जैसी अवस्था में जिन्दगी बिताना पडता है । इससे समाज का दर्जा निम्न स्थार पर पहुँचता है । इतने खतरें झेलकर आयी अपरा जब आदित्य का हित चाहने के लिए प्रयत्न करती है, तब आदित्य अपरा के साथ कुछ अलग सम्बन्ध रखना चाहता है, वह उसे बम्बई ले जाता है, उसमें वह सफलता प्राप्त नहीं करता, तभी अपरा को हत्या करने के बारे में सोचता है । ऐसा चित्र आज भी समाज में चलता है, पत्नी को, प्रेमिका को, भाभी को, जला कर मारने वालों की आबादी समाज में कम नहीं हैं । इस तरह "अनन्तर" में जैनेन्द्र ने प्रस्तुत किए समस्याएँ आज भी समाज में दिखाई देती है । उसमें परिवर्तन बहुत आवश्यक है, जिसमें समाज का पर्याप्त से नारी का जीवन सुखमय हो जायेंगा ।

[क] " अनामस्वामी :-

" अनामस्वामी" उपन्यास में " त्यागपत्र " के " प्रमोद " के त्यागपत्र देने के बाद का जीवन का चित्रण इस उपन्यास में किया है । जैनेन्द्र ने प्रथम एक दो परिच्छेदों में चिन्तन पर विश्लेषण और उसमें कथात्मकता नहीं है । फिर बारह परिच्छेदों कथात्मकता आशय में विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है ।

इस उपन्यास में दुःखी प्रमोद जो " अनामस्वामी " का बालजीवन का मित्र है, उसके दुःख का कारण वह जजसाहब पद का इस्तीफा देता है, उसे अपनी बुआ मृणाल का जीवन और अपना जीवन इसकी तुलना करके दुःखी होता है, वह आध्यात्मिकता के कारण आश्रम में जाता है । साथ ही साथ अपनी विधवा पुत्री अंजू की पुत्री

" उदिता " को भी लेकर जाता है । यह एक प्रसंग । दूसरा प्रसंग जैनेन्द्रजी ने शंकर उपाध्याय के माध्यम से बताया है । शंकर उपध्याय जो एक विघ्नसंतोषी पात्र है, वह वसुन्धरा से विवाह करना चाहता था, लेकिन विवाह संस्था के कारण विवाह नहीं होता । फिर अनामस्वामी के आश्रम का कुमार भक्त है, जिसके साथ उसका विवाह होता है । इसलिए शंकर अनामस्वामी, वसुन्धरा, कुमार, विवाह संस्था, आश्रम इन्हीं के खिलाफ विद्रोही बन जाता है ।

इस तरह दु:खी हुआ शंकर शादी करके भी अशान्त होने के कारण पत्नी की हत्या करता है । उसके षडयन्त्र के कारण कुमार को लम्बी बीमारी में जीवन बीताना पडता है । बादमें कुमार के कहने पर वसुन्धरा को शंकर उपाध्याय के पास जाती है, और उसका वहाँ मृत्यु हो जाता है । वह वसुन्धरा की हत्या जहर की सुई लगाकर करता है । खुद आत्महत्या करने का प्रयास करता है, लेकिन बच जाता है । फिर आठ वर्ष बाद आत्महत्या करता है ।

इन तमाम घटनाओं से शंकर ने दोन स्त्रियों की जान खत्म कर दी, खुद भी मर गया । कुमार को भी जिन्दगी भर बिमारी में रखा । यह सब प्रेम-कुण्ठा के कारण, आत्मपीडा के वजह से हुआ है ।

आज की ये तमाम समस्याएँ दिखाई देती हैं । कई बार आन्तर जातिय विवाह, आन्तर धार्मिय विवाह, अमेल विवाह, परम्पाराएँ इन सभी कारण बहुत से उदाहरण हम आत्महत्या करनेवाले के देखतें हैं, पढते हैं, सुनते हैं । दहेज के वजह से स्त्री को परेशान करके उसे आत्महत्या करने के लिए मजबूर किया जाता है । दहेज के कारण

नवजवान लडकी का विवाह बूढे आदमी से होता है, जिसके कारण परिवार में बिखराव आता है । प्रेमचन्द के निर्मला, सेवासदन आदि उपन्यास में यही दिखाई देता है ।

दहेज देने के लिए कहीं जगह भ्रष्टाचार भी हो जाने की संभावना है । ये तमाम घटनाएँ समाज ने बनाये गये नियमों के कारण ही पैदा हो गये हैं । इन तमाम घटना और प्रसंग से छुटकारा पाने के लिए " अनामस्वामी " में अध्यात्मिकता के लिए " आश्रम की कल्पना जैनेन्द्र ने बतायी है, लेकिन इसकी स्थिति आज कहीं नहीं दिखाई देती । अगर कहीं होगी तो उस तरफ कितने लोग जायेंगें यह सवाल संशोधन का है, क्यों, कि, जिस समय प्रेम-कुण्ठा बढती है, प्रेम असफल हो जाता है, तब के उम्र का अगर विचार किया गया, तो यह बात अशक्यप्राय है, क्यों, कि, उस उम्र में नवयुवक इस तरफ नहीं जायेंगे । वे हमेशा सिनेमा देखकर ही दिल बहलाव करते हैं, आत्महत्या भी वह देखकर करतें हैं । बाद में कुछ उपाय की भी वह देखकर करते हैं, उनके लिए " आदर्श " के रूप में हकिकत में वही है ।

संक्षेप में जैनेन्द्र ने " अनामस्वामी " में आज के समस्याओं से ताल्लुक रखनेवाले बहुत से प्रसंग बताये है । ऐसा समाज में आज भी होता है । पती बहुत से पत्नियों की हत्या करता है । वह एक पत्नी पर खुश नहीं रहता, बहुत से स्त्रियों से सम्बन्ध रखना चाहता है । समाज में ऐसे लोगों के कारण दूसरे परिवार भी बिखर जाते हैं, जो इस उपन्यास में शंकर उपाध्याय ने किया है, पहले अपने पत्नी की हत्या, उसने उस लडकी के माँ-बाप को दु:खी किया, फिर कुमार कों रोगग्रस्त, वसुन्धरा की हत्या, इससे दूसरा परिवार खत्म किया । बाद में खुद का भी अन्त ।

आज भी वही स्थिति है, मगर " अनामस्वामी " में जैनेन्द्र ने आश्रम की जो कल्पना बताई है, उसका उपभोग नहीं हो सकता । मनुष्य इस रास्ते पर वृद्धावस्था में जाता है, और उस समय तक वह सब कर चुका रहता है । बहुत से बुरे कृत्य करने कारण ही आज के लोग फिर अध्यात्म मार्ग पर चलते हैं, सब लोग ऐसे नहीं मगर आज का पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण तो यह बात थोडी कठिन सी दिखाई देती है । फिर भी जैनेन्द्रकुमारजी ने आज के समाज के लिए बहुत समस्याएँ बताकर, घटना, प्रसंग बताकर समाज को सही रास्ते पर आनेका संकेत दिया है । तमाम उपन्यासों से यह उपन्यास थोडा अलग है, साथ ही साथ इसमें कुछ विशेषताएँ भी हैं ।

[ड] दशार्क :-

जैनेन्द्रजी के पूरे उपन्यासों में सामाजिक चिन्तन दिखाई देता है, उनका कहना है, कि उपन्यास पढनेवाला पाठक कागज पर उपन्यास खत्म करता है, मगर उसके हृदय में कभी समाप्त नहीं होता, बहुत दिनों तक उसका स्मरण रहता है, सुनीता, मृणाल, सुखदा ऐसी ही है, पचास साल होकर भी उसे भूलना कठीन है, यह उनकी विशेषता है, यह हो गया पहले उपन्यासों के बारे में लेकिन उनका बारहवाँ और आखरी उपन्यास " दशार्क " जो है, वह तो १९८५ में लिखा गया है, इसलिए उसमें चित्रित जो समस्याएँ हैं, वे आज की समस्याओं से यानी समकालीन समस्याओं से भिन्न है, ऐसा कहना गलत है, समस्याएँ वही हैं, सिर्फ इतना कहा जायेगा, कि इन नौ सालों में कम नहीं हुई, बल्कि उनमें और तीव्रता आ गयी है, उससे समाज में, देशमें, दुनिया में कयामत आ गयी हैं ।

आज बहुत सी समस्याओं से सामना करना पड रहा हैं, चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो, धार्मिक हो, राजनीतिक हो या आर्थिक हो सब सवाल या समस्याएँ आज बढ रहीं हैं । "दशार्क" उपन्यास में ये बतायी गयी समस्या पारिवारिक है, जो रंजना और शेखर के बीच पैसे के कारण पारिवारिक बिखराव हुआ है । आज भी बहुत से परिवार टूट रहे हैं, उसके कारण सोचना संशोधन का विषय है । साथ ही साथ समाज में आज भी बाल-विवाह, अमेल-विवाह, विधवा विवाह, जारी है, इसके कारण उसका असर अलग अलग रूप में मिलता है । कहीं पे इसका असर जन संख्या बढने के का है, कहीं आर्थिक अभाव के कारण ये स्त्रियाँ गलत रास्ते पर जा रहीं हैं । " दशार्क " में मानेकलाल सेठ, जो अमीर है, उसको तीन चार मिलें हैं, पैसों की कमी नहीं है, इसका उपयोग वह निम्नवर्ग के लोगों पर अन्याय, अत्याचार के लिए करता है । उसके पास बहुत धन रहने कारण उसके मकानों की संख्या जादा रहना स्वाभाविक है, और सामग्री की भी कमी नहीं हैं । इसी कारण अपनी जायदाद, मकान सब बेनाम करता है, रंजना जहाँ व्यवसाय करती है, वह मकान उसका ही है, लेकिन दूसरे एक गरीब आदमी के नाम पर है, वह एक कमरे में बहुत दयनीय स्थिति में जिन्दगी बिता रहाँ है, और मानेकलाल सेठ रंजना के खिलाफ रहने के कारण वकील के द्वारा नोटिस देता है, मकान खाली करनेका । यानी आज भी केन्द्रीय मंत्री से लेकर छोटे गाँव के मुखिया तक यही दिखाई देता है । सरकार को, समाज को फँसाकर जो धन कमाया जाता है, जिसको काला पैसा कहा जायेगा उससे निर्मित जो संपत्ति है, वह दूसरों के नाम और सफेद पैसे का अपने नाम यह आज का भी चित्र हम अखबार में देखते हैं, उस पर चर्चा करते हैं, लेकिन उससे क्या होता ? यह सब चलता ही रहता है ।

" दशार्क " में बताया गया माधवदास नामक स्मगलर है, आज तो स्मगलरों का ही राज्य है, यह हम देख ही रहें और उसका परिणाम भी भुगतना पड रहा है । स्मगलर समाज के लिए, देश के लिए, सरकार बनाने के लिए या और किसी भी काम के लिए क्या क्या कर सकते हैं, यह बताने की आवश्यकता ही नहीं । देश में विस्फोट सब कुछ देशद्रोही काम चल रहा है । सरकार इन्हीं के बारे में क्या कर सकती है, यह आज तो बताना महा प्रयास का काम हो गया है ।

" दशार्क " में रंजना, मेहन्दी, सकिना, मालती इनको समाज ने किस तरह सही रास्ते पर लाया है, इतना ही नहीं, उनके साथ बर्ताव किस तरह किया जाता है, यह आज भी बहुत से समाज सुधारक इस महान कार्य के पीछे लगे हुए दिखायी देते हैं । जैनेन्द्रजी ने सभी लोग ऐसे ही यह बताने का प्रयास किया है, ऐसी बात नहीं है, रंजना के साथ दोस्ती करने वाला फ्रान्स का एक नवयुवक " पियर " है, वह रंजना से कुछ चाहने के सिवा उसको बहुत पैसा देता है । मगर उसके बदले रंजना से कुछ चाहना या वासना के दृष्टि से नहीं देखता । दोनों एक दूसरे से स्वार्थ के लिए दोस्ती नहीं करते । पियर दो दिन यहाँ रहता हैं, लेकिन उसका उद्देश्य और कुछ नहीं, मगर समाज में और ही हलचल चलती है, । पियर जैसे आज समाज में ऐसे लोगों को ढूँढकर निकलने का प्रयास करने पर भी मिलने की असंभावना है, अगर कुछ मिले भी तो बहुत कम होंगे । मगर मानेकलाल सेठ जैसे बहुत मिलेंगे, जो रंजना को पाँच लाख देकर प्राप्त करना चाहते हैं ।

" दशार्क " में मुनिश्री विद्यासागर महाराज, पियेर, अभेदानन्दस्वामी ऐसे आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर आश्रम में रहने वाले लोग भी कम दिखाने को मिलते हैं । आज पाश्चात्य प्रभाव के कारण यह बात नामुमकिन हैं । जैनेन्द्रजी ने " दशार्क " में वेश्या, स्मगलर, सचिव के सहायक, पुलिस, मन्त्री, सेठ, इन तमाम पात्रों के द्वारा अलग अलग समस्या दिखाकर उसमें सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा रखी हैं, परिणाम कितना होगा, यह बात अलग है । इस तरह जैनेन्द्रजी का आखरी उपन्यास बहुत महत्वपूर्ण रहा है, इसमें पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी पर प्रकाश डाला है, उसका असर क्या होता है, और यह समाज में चाहिए या नही ? अगर समाज में वेश्या बनती तो क्यों ? कौन बनाता है ? बन गयी तो उसके प्रति हमारे मन में दया, सहानुभूति चाहिए या नहीं ? समाज में अ इन्हीं द्वारा लाभ हैं या नहीं ? अगर है, तो वह कैसा ? आदि महत्वपूर्ण विचार उन्हों ने दशार्क के माध्यम से बताने का बहुत उचित प्रयास किया है, इसलिए जैनेन्द्रजी का " दशार्क " इस कृति के कारण स्थान असाधारण रहा हैं ।

निष्कर्ष :-

जैनेन्द्र तत्ववादी हैं, दार्शनिक हैं, विचारक हैं, और आस्तिक हैं - आदि स्वर आज तेजी से उभरे हैं । उनको सुकरात बनने का चाव चर्राया जिससे उनका बाद का कथा साहित्य तत्व दर्शन की पहेलिका में उलझा कर बिखर गया है ।

जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक अनुभूति के आधार पर विकृतिपूर्ण जीवन का परीक्षण करते हैं । उनकी मनोवैज्ञानिक पध्दति उनके दर्शन तथा चिन्तन-मनन का कारण है । वह जीवन मंथन से विकृतियों को

एक सहृदय डाक्टर की भाँति खोजते हैं, तथा तीव्रतम भाव-प्रवाह को साधन के रूपमें लेकर उसका निराकरण या परिष्कार करना चाहते हैं ।

साठोत्तरी पीढ़ी का एक नया नारा आधुनिक युग बोध का है । आधुनिकता का आशय नये विचार, नयी शिल्प,शैली और तथाकथित शाश्वत समस्याओं से सम्बन्ध किया जाना चाहिए । और इस दृष्टि से जैनेन्द्र का उपन्यास साहित्य पूर्णतया सक्षम है, आधुनिक युग बोध को अपने में अभिव्यंजित करने में । नूतन विचार-सरणी की स्थापना उनके उपन्यासों के प्राणतत्व है । विचारों के नवीनीकरण के बिना कोई भी कृति आधुनिकता से सम्बोधित नहीं हो सकती है ।